खण्ड

1

भारतीय भाषा परिवार

इकाई 1
भारतीय-आर्य भाषा परिवार 7

इकाई 2
द्रविड़ भाषा परिवार 18

इकाई 3
ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार 26

इकाई 4
चीनी-तिब्बती तथा अन्य भाषा परिवार 40

खण्ड-1 का परिचय

एम.ए. अनुवाद अध्ययन कार्यक्रम के **अनुवाद एवं भारतीय भाषाएँ** पाठ्यक्रम (एम.टी.टी. 014) का पहला खण्ड भारतीय भाषा परिवार है। भारतीय भाषा परिवार से तात्पर्य उन भाषा परिवारों से हैं जिनकी भाषाएं भारत में बोली जाती हैं। प्रमुख रूप से इनकी संख्या चार है जिनके अन्तर्गत कई भाषाएँ आती हैं। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनुवाद एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य करता है।

इस खण्ड में कुल चार इकाइयाँ हैं:

इकाई 1 का शीर्षक है **भारतीय-आर्य भाषा परिवार।** भारतीय-आर्य भाषा परिवार एक अलग भाषा परिवार न होकर एक बड़े परिवार भारोपीय भाषा परिवार का अंग है। इस अध्याय के अंतर्गत इस अन्तर को समझाते हुए तथा वर्गीकरण करते हुए भारतीय-आर्य भाषा परिवार पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

इकाई 2 का शीर्षक है **द्रविड़ भाषा परिवार।** द्रविड़ भाषा परिवार के अन्तर्गत भारत के दक्षिण भाग में बोली जाने वाली भाषाएँ आती हैं। द्रविड शब्द की उत्पत्ति, द्रविड़ भाषाओं का स्थान तथा इन भाषाओं की विशेषताओं का गहन अध्ययन इस इकाई में देखा जा सकता है।

इकाई 3 का शीर्षक है **ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार।** ऑस्ट्रिक भाषा परिवार को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जाता है - ऑस्ट्रोनेशियाई भाषा परिवार तथा ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार। भारत तथा भारत के आसपास बोली जाने वाली भाषाएँ ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार के अन्तर्गत आती हैं। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में इसकी चर्चा विस्तार से की गई है।

इकाई 4 का शीर्षक है **चीनी-तिब्बती एवं अन्य भाषा परिवार**। चीनी-तिब्बती भाषा परिवार जिसे सिनो-तिब्बती या तिब्बती-चीनी भी कहा जाता है, विश्व के सबसे बड़े भाषा परिवारों में से एक है। इसके बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। इस भाषा परिवार के दो मुख्य समूह हैं - चीनी और तिब्बती बर्मी। चीनी से तात्पर्य विभिन्न चीनी भाषाओं से है और तिब्बती-बर्मी भाषाएं मुख्यतः तिब्बत, म्यांमार तथा उत्तर-पूर्व भारत में बोली जाती हैं। इन भाषाओं में तिब्बती समूह की भाषाएँ ही भारत में बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त इस इकाई में अन्य भाषा परिवारों की भी संक्षेप में चर्चा की गई है।

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 1 भारतीय-आर्य भाषा परिवार

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 भारतीय भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

1.2.1 ईरानी उपशाखा

1.2.2 दरद उपशाखा

1.2.3 भारतीय-आर्य उपशाखा

1.3 भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक विकास

1.4 भारतीय भाषाएँ और हिन्दी : अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या

1.5 सारांश

1.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- विभिन्न भाषा परिवारों के बारे में जान सकेंगे;
- भारत में किन-किन भाषा परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं, यह जान सकेंगे;
- भारतीय आर्य भाषाओं का ऐतिहासिक विकास क्रम समझ सकेंगे;
- भारतीय आर्य भाषाओं के साम्य-वैषम्य की विवेचना कर सकेंगे; और
- भारतीय भाषाओं और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

भाषा का सम्बन्ध व्यक्ति, समाज और देश से होता है। इसलिए प्रत्येक भाषा की निजी विशेषताएँ होती हैं। इनके आधार पर वह एक ओर कुछ भाषाओं से समानता स्थापित करती है तो दूसरी ओर बहुत सी भाषाओं से असमानता। इसके आधार पर ही उन्हें भाषा-परिवारों में विभाजित किया जाता है। इस वर्गीकरण का आधार पूर्णतः वैज्ञानिक होता है। वस्तुतः विश्व की समस्त भाषाओं को उनके गुणों और साम्य-वैषम्य के आधार पर भाषा-परिवारों में बांटा गया है। विश्व में कुल ग्यारह भाषा-परिवार हैं – भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रिक, तिब्बती-चीनी, सैमेटिक-हैमेटिक, यूराल-अल्टाइक, मलै-पॉलीनीशियन, बंटू, मध्य-अफ्रीकी, अमेरिकी। इनमें से चार भाषा परिवारों की भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं : द्रविड़, ऑस्ट्रिक, भारोपीय और तिब्बती-चीनी। इनमें से भारोपीय परिवार सबसे बड़ा है। भारत में बोली जाने वाली अधिकांश भाषाएँ इसी भाषा परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। उनके बारे में हम अगले खंड में विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.2 भारतीय भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

भारत एक बृहत् भाषायी क्षेत्र है और देश की भाषिक तथा सामाजिक इकाइयों की विभिन्नताओं में भी एक सूत्रता है जो सबको जोड़े रहती है। भारत में चार भाषा परिवारों की 1652 भाषाएँ (भारतीय जनगणना 1961) बोली जाती

हैं। ये चार भाषा परिवार (क) ऑस्ट्रिक भाषा परिवार (ख) तिब्बती-चीनी भाषा परिवार (ग) द्रविड़ भाषा परिवार तथा (घ) भारोपीय भाषा परिवार हैं। भारत के भाषा परिवारों में भारतीय आर्यभाषाओं की स्थिति को निम्न आरेख के माध्यम से सरलता से समझा जा सकता है। देखिए वंश वृक्ष - 1.

वंशवृक्ष-1

भारत में बोली जाने वाली भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

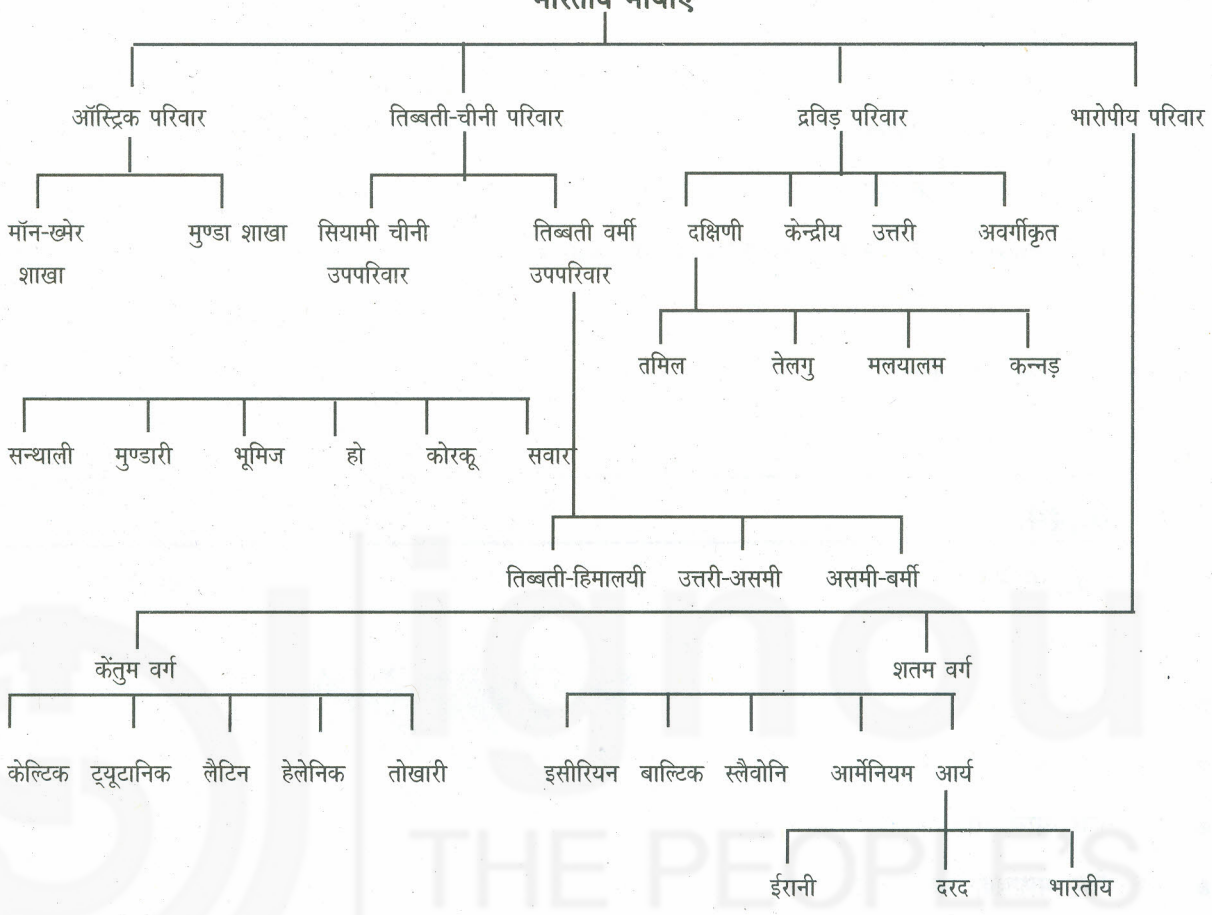

भारोपीय परिवार संसार का सबसे महत्वपूर्ण भाषा परिवार है। इसका विस्तार भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक है। इस परिवार की भाषाओं को दो वर्गों में विभक्त किया गया है - केतुम् और सतम्। इनमें से सतम् वर्ग के अंतर्गत भारत-ईरानी या आर्य शाखा है। इस भारत-ईरानी शाखा की उपशाखाएं ईरानी, दरद और भारतीय आर्यभाषाएँ हैं। इनमें से दरद और भारतीय आर्यभाषा उपशाखाओं की भाषाएँ भारतवर्ष में बोली जाती हैं।

1.2.1 ईरानी उपशाखा

ईरानी उपशाखा की प्रधान भाषा 'ईरानी' भाषा बहुत प्राचीन है और उसका प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य 'अवेस्ता' रूप में उपलब्ध है। हरव्मानी बादशाहों के छठी शताब्दी ईसा पूर्व के शिलालेख भी ईरानी भाषा के प्राचीन रूप के उदाहरण हैं। ईरानी भाषा के पूर्वी और पश्चिमी दो रूप हैं। पामीरी बोलियाँ तथा अवेस्ता की भाषा पूर्वी ईरानी हैं जबकि पश्चिमी ईरानी के अंतर्गत मीडिअन तथा प्राचीन फारसी की गणना है।

प्राचीन ईरान के पश्चिमी भाग को 'फारस' कहा जाता था और वहाँ की भाषा को फ़ारसी। ईरानी के दोनों रूप प्राचीन फ़ारसी और अवेस्ता लगभग समकालीन हैं। कुछ विद्वान 'अवेस्ता' को अधिक प्राचीन मानने के पक्ष में है। प्राचीन फ़ारसी का प्राचीनतम रूप एकेमेनियन राजाओं के खुदवाए कीलाक्षर अभिलेखों में देखा जा सकता है। प्राचीन फ़ारसी का ही विकसित रूप 'पहलवी' कहलाता है और पहलवी का साहित्य तीसरी सदी से मिलने लगता है। पहलवी के दो रूप हैं - 1. हुज्वारेश 2. पारसी या पाज़ंद। हुज्वारेश पर सेमेटिक परिवार का प्रभाव देखा जा सकता है। इसकी लिपि भी सेमेटिक है जबकि पारसी या पाज़ंद पर यह प्रभाव नहीं है। भारत में बसने वाले पारसियों की भाषा यही है और गुजराती पर पाजंद का पर्याप्त प्रभाव है। अवेस्ता और प्राचीन फ़ारसी संस्कृत के

निकट हैं तो मध्यकालीन फ़ारसी अपभ्रंश के निकट। आधुनिक फ़ारसी साहित्य में फिरदौसी का 'शाहनामा' एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसकी भाषा में अरबी शब्दों की बहुलता नहीं है पर बाद की फारसी में अरबी शब्दों की बहुलता बढ़ने लगी। इधर फिर फ़ारसी में अरबी शब्दों को हटाकर ईरानी शब्दों का प्रयोग राष्ट्रीयता की भावना के कारण बढ़ रहा है। बर्गिस्ता, पश्तो (पख्तो), देवारी, बलूची, कुर्दी आदि भाषा रूप ईरानी के ही हैं और अपने लोक साहित्य के कारण ये सभी सम्पन्न हैं।

1.2.2 दरद उपशाखा

इस उपशाखा की प्रधान भाषा कश्मीरी है। कश्मीरी जम्मू-कश्मीर के लगभग 10,000 वर्गमील के विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है। भारतीय संविधान की आठवीं धारा के अंतर्गत यह जम्मू कश्मीर की राजभाषा है। अनन्तनाग, श्रीनगर, बारामुला तथा डोडा में यह प्रमुख रूप में बोली जाती है। भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार मातृभाषा के रूप में यह 55,27,698 (0.54 प्रतिशत) व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है तथा संख्या की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में इसका स्थान पन्द्रहवां है। कश्मीरी मातृभाषी इसे 'काशूर' नाम से पुकारते हैं किंतु भारतीय संविधान में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ इसे कश्मीरी नाम दिया गया है। कश्मीरी नाम का प्रयोग यद्यपि अमीर खुसरो ने तेरहवीं शती में किया था किंतु कश्मीर प्रान्त में सत्रहवीं शताब्दी तक इसके लिए भाषा नाम का ही प्रयोग होता रहा। इस प्रकार कश्मीरी नाम का प्रचलन बहुत बाद में हुआ, किंतु साहित्यिक रचनाएं इस भाषा में काफी पहले से ही हो रही थीं। तेरहवीं शती में शितिकंठ ने 'महानय प्रकाश' तथा लल्देद् ने अपनी कृतियों द्वारा कश्मीरी को समृद्ध किया। नुन्दऋषि, हब्बा ख़ातून, अरणिमाल, हबीबंउल्लाह, नौशहरी, साहिब कौल, प्रकाश राम, रमजान बठका, बरीउल्लाह आदि कश्मीरी के प्रमुख मध्ययुगीन कवि हैं। आज से 600 वर्ष पूर्व तक कश्मीरी की अपनी शारदा लिपि थी, किंतु 14वीं शताब्दी से जब फारसी कश्मीर की राजभाषा बनी तो कश्मीरी के लिए फारसी लिपि का प्रयोग होने लगा।

1.2.3 भारतीय-आर्य उपशाखा

भारतवर्ष के अधिकांश भूभाग में (दक्षिण भारत को छोड़कर) भारतीय आर्य उपशाखा की भाषाएँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान द्वारा अनुसूचित भाषाओं में प्रधान नौ भाषाएँ - असमिया, ओड़िया, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, सिंधी, हिन्दी और उर्दू इसी उपशाखा की भाषाएँ हैं। भारतवर्ष में बोली जानेवाली प्रधान भारतीय आर्य भाषाएँ निम्नलिखित हैं :

ओड़िया : ओड़िया उड़ीसा प्रान्त की राजभाषा है। यह 60,136 वर्गमील वाले उड़ीसा प्रदेश में तो बोलचाल की भाषा है ही, साथ ही बंगाल के मेदिनीपुर; बिहार सिंहभूम, सराई केला, खरसुआ; मध्यप्रदेश के पुरुलझर, रायगढ़, बस्तर तथा आंध्र प्रदेश के कुछ भागों में भी बोली और समझी जाती है। इसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है तथा इसकी लिपि वर्तुलाकार देवनागरी है। भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार भारत में 33017446 (3.21 प्रतिशत) ओड़िया मातृभाषा भाषी हैं जो कि भारत में संख्या की दृष्टि से दसवें स्थान पर है। ओड़िया के प्राचीन तथा अर्वाचीन, दोनों ही साहित्य सम्पन्न है। आधुनिक कवियों में गोप बंधुदास, नीलकंठ दास, पद्मचरण पट्टनायक, लक्ष्मीकांत महापात्रा तथा कुंतला कुमारी सावंत आदि सुविख्यात नाम हैं। कालिंदीचरण पाणिग्रही, हरिहर महापात्र, हरिश्चन्द्र मुकर्जी तथा आनन्द शंकर राय भी ओड़िया के उल्लेखनीय साहित्यकार हैं।

बांग्ला : आर्यभाषा परिवार की मागधी अपभ्रंश प्रसूत, आधुनिक आर्यभाषा बांग्ला पश्चिम बंगाल में बोलचाल की मुख्य भाषा है। भारतीय संविधान की आठवीं धारा के अंतर्गत यह पश्चिम बंगाल की राजभाषा स्वीकार की गई है। जनसंख्या की दृष्टि से आधुनिक भारतीय भाषाओं में बांग्ला भाषा-भाषियों का स्थान दूसरा है। बांग्ला 8,33,69,769 (8.11 प्रतिशत) भारतीयों की मातृभाषा है। बांग्ला की पाँच प्रधान उपभाषाएँ हैं :

1. उत्तरी-पूर्वी बांग्ला, 2. उत्तरी बांग्ला, 3. पूर्वी बांग्ला, 4. पश्चिमी बांग्ला, 5. दक्षिण-पश्चिमी बांग्ला। इनमें से प्रथम तीन बांग्लादेश में तथा शेष दो भारत गणराज्य के पश्चिम बंगाल राज्य में बोली जाती हैं। बौद्धधर्म के सहजिया सम्प्रदाय के चर्यापदों में बांग्ला भाषा का प्राचीनतम साहित्यिक रूप देखने को मिलता है। चर्यापदों के काफी समय बाद बांग्ला भाषा का दूसरा काव्यमय रूप हमें कृष्ण की रस गाथाओं को आधार बनाकर लिखे गए

जयदेव के काव्य में मिलता है। चैतन्य महाप्रभु कृष्ण-कीर्तन भी बांग्ला भाषा का पन्द्रहवीं शती का रूप प्रस्तुत करते हैं। कृतिवास की लिखी हुई 'रामायण', जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' तथा चंडीदास की रचनाएं बांग्ला साहित्य की अनुपम निधि हैं। आज बांग्ला भाषा में सभी साहित्यिक विधाएं मिलती हैं। आधुनिक युग के साहित्यकारों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरत् चन्द्र, विमल मित्र, ताराशंकर बंधोपाध्याय, शंकर आदि नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

असमिया : मध्ययुग की अर्द्धमागधी से प्रसूत, भारत के पूर्वी भाग में 85,000 वर्गमील के विस्तृत तथा पहाड़ी प्रदेश में बोली जानेवाली असमिया, असम प्रदेश की राजभाषा है। असमिया मुख्यतः ब्रह्मपुत्र घाटी के छह जिलों में बोली जाती है। भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार भारत में 1,31,68,484 (1.28 प्रतिशत) व्यक्तियों ने इसे अपनी मातृभाषा कहा है। असमिया की बोलियाँ झरवा, मयांग आदि हैं तथा असमिया असम के अतिरिक्त मेघालय तथा अरुणाचल प्रदेश में भी बोली जाती है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि का ही एक रूप है जो कि बांग्ला से विकसित हुई है। असमिया भाषा का प्राचीनतम साहित्यिक रूप हमें चर्यापद के दोहों में मिलता है। असमिया साहित्यिक दृष्टि से सम्पन्न भाषा है। उदीयमान कवियों में नवकल बरुआ, हरिहर काकली, वीरेन्द्र भट्टाचार्य, महेन्द्र बरा, हीमेन बरगोहांई तथा वीरेन्द्र बरगोहांई के नाम उल्लेखनीय हैं।

सिंधी : भारतीय आर्य भाषाओं की उदीची शाखा की ब्राचड़ अपभ्रंश से विकसित सिंधी भारतवर्ष में 25,35,455 (0.25 प्रतिशत) लोगों द्वारा मातृभाषा स्वीकार की गई है। इसके बोलने वाले महाराष्ट्र, पंजाब, तथा मध्य प्रदेश में भी हैं। यह मूलतः सिंध प्रदेश की भाषा है।

पंजाबी : आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में सिंधी और लंहदा ही सहोदरा पंजाब राज्य की प्रधान बोलचाल की भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या 29102477 (2.83 प्रतिशत) है तथा जनसंख्या की दृष्टि से भारतवर्ष में प्रचलित भाषाओं में इसका स्थान ग्यारहवां है। पंजाबी की मुख्य लिपि गुरुमुखी है, जो देवनागरी का ही एक रूप है। गुरु नानक, गुरु अर्जुन, भाई गुरुदास पंजाबी के भक्त कवि हैं। पंजाबी की 29 बोलियां हैं जिसमें भटिंयाली, कलूहरी, जंगरी, गुरुमुखी, कांगड़ी तथा राठी प्रधान हैं।

गुजराती : शौरसेनी अपभ्रंश प्रसूत गुजराती 710,072 वर्गमील के गुजरात प्रदेश के उत्तर में कच्छ और मारवाड़ा से लेकर दक्षिण में मुंबई के थाने जिले तथा पश्चिम में अरब सागर एवं पूर्व में मालवा और खानदेश के बीच भाजग 2001 के अनुसार 46091617 (4.48 प्रतिशत) व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। भारतवर्ष में जनसंख्या की दृष्टि से गुजराती का स्थान सातवां है। यह गुजरात की राजभाषा है। इसकी लिपि शिरोरेखा मुक्त देवनागरी लिपि ही है।

मराठी : महाराष्ट्री अपभ्रंश प्रसूत मराठी, महाराष्ट्र की बोलचाल की प्रमुख भाषा है तथा भारतीय संविधान के अनुसार यह महाराष्ट्र राज्य की राजभाषा भी स्वीकृत की गई है। इसके बोलनेवालों की संख्या 7,19,36,894 (6.9 प्रतिशत) है जो कि समस्त भारतीय भाषाओं में जनसंख्या की दृष्टि से चौथे स्थान पर आती है। इसकी लगभग 65 बोलियां हैं। इसकी प्रमुख बोलियां हलबी, कोंकणी, कमारी, कटिया, कटकरी, कोठी, मराठी, क्षत्रिय मराठी, परखारी तथा वर्ती है। मराठी भाषा की लिपि देवनागरी है। साहित्यिक दृष्टि से मराठी अति सम्पन्न है। ज्ञानदेव, नामदेव, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, मुक्तेश्वर, तुकाराम, रामदास, मराठी के प्रसिद्ध संत कवि हैं।

हिन्दी : हिन्दी आधुनिक आर्यभाषा परिवार की एक मुख्य भाषा है। इसे भारतीय संविधान में भारतीय संघ की राजभाषा स्वीकृत किया गया है। हिन्दी भारत के एक विस्तृत भूभाग की भाषा है। यह उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली व अंडमान तथा निकोबार में प्रमुख रूप से बोली जाती है। भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार भारत की 41.03 प्रतिशत जनता मातृभाषा के रूप में हिन्दी का व्यवहार करती है। हिन्दी प्रधानतया देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

भारतीय भाषाओं की अष्टम् अनुसूची में उर्दू तथा संस्कृत भाषा का भी उल्लेख है। भारतीय जनगणना के अनुसार मातृभाषा के रूप में उर्दू का प्रयोग करने वालों की संख्या 5,15,36,111 (5.91 प्रतिशत) है। संस्कृत भाषा का मातृभाषा के रूप में प्रयोग करने वालों की संख्या 14,135 है। वस्तुतः संस्कृत का व्यवहार बोलचाल की भाषा के रूप में नगण्य ही है। उर्दू अनुसूचित भाषाओं में प्रमुख स्थान रखती है। राजनीतिक दृष्टि से वह पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा भी है पर भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से उर्दू हिन्दी की अरबी-फारसी शब्द प्रधान एक साहित्यिक शैली है। मुगलों के भारत आने पर सैनिक शिविरों में भारतीय व्यापारियों तथा मुगल सैनिक खरीददारों के बीच जिस भाषा

का विकास हुआ, वह भाषा संरचना की दृष्टि से खड़ी बोली थी तथा उसके शब्द-भंडार में फारसी-अरबी शब्द भी थे। उर्दू शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में कब से प्रारम्भ हुआ, यह विषय अभी भी विवादास्पद बना हुआ है। अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि उर्दू शब्द का भाषा के लिए प्रयोग अठारहवीं सदी के अंत में ही हुआ है।

1.3 भारतीय आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक विकास

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का मूल आर्यों की प्राचीन भाषा संस्कृत है। ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से भारतीय आर्यभाषा शाखा को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है :

1. प्राचीन आर्यभाषा काल (2000 ई.पू. - 500 ई.पू.)
2. मध्यकालीन आर्यभाषा काल (500 ई.पू. - 1000 ई.)
3. आधुनिक आर्यभाषा काल (1000 ई.पू. - आज तक)

प्राचीन आर्यभाषा काल तथा मध्यकालीन आर्यभाषा काल को तीन-तीन उपकालों में विभाजित किया जा सकता है और आधुनिक आर्यभाषा काल को दो उपकालों में। प्रत्येक काल की अवधि 1500 वर्ष तथा उपकाल की अवधि लगभग 500 वर्ष की मानी गई है। आधुनिक आर्यभाषा का दूसरा उपकाल 2000 ई. तक होगा।

1. प्राचीन आर्यभाषा काल (2000 ई.पू. - 500 ई.पू.)
   - (क) वैदिक भाषा काल (2000 ई.पू. - 1500 ई.पू.)
   - (ख) ब्राह्मण काल (1500 ई.पू. - 1000 ई.पू.)
   - (ग) साहित्यिक संस्कृत काल (1000 ई.पू. - 500 ई.पू.)
2. मध्यकालीन आर्यभाषा काल (500 ई.पू. - 1000 ई.)
   - (क) पाली भाषा काल (500 ई.पू. - 001 ई.)
   - (ख) प्राकृत भाषा काल (001 ई. - 500 ई.)
   - (ग) अपभ्रंश भाषा काल (500 ई. - 1000 ई.)
3. आधुनिक आर्यभाषा काल (1000 ई. - 2010 ई.)
   - (क) प्राचीन अपभ्रंश से प्रभावित रूप (1000 ई. - 1500 ई.)
   - (ख) मध्ययुग (1500 ई. - अब तक)

आधुनिक आर्यभाषा काल के मध्ययुग में अनेक प्रादेशिक भाषाओं के साहित्यिक रूप विकसित हुए। इसी युग में अवधी, ब्रज, और मैथिली को साहित्यिक मान्यता प्राप्त हुई।

किसी भी भाषा के दो रूप हो सकते हैं :

(क) मौखिक या बोलचाल का रूप

(ख) साहित्यिक रूप।

प्राचीन आर्यभाषा काल में भाषा का मौखिक रूप क्या था, यह हम आज भी निश्चित रूप से नहीं जानते। उस काल का साहित्यिक रूप हमें ऋग्वेद की भाषा में देखने को मिलता है। साहित्यिक तथा मौखिक रूप में हमेशा अंतर होता है पर साहित्यिक रूप भी जनता द्वारा समझा जाता है। प्रत्येक साहित्यिक भाषा का जीवन काल लगभग 500 वर्षों का रहता है। धीरे-धीरे जनता की भाषा का विकास होता रहता है, जबकि साहित्यिक भाषा स्थिर रहती है और एक समय ऐसा आता है जबकि जनता साहित्यिक भाषा को नहीं समझ पाती। यही समय है कि जब मौखिक रूप का आधार लेकर एक नई साहित्यिक भाषा का जन्म होता है।

500 ई.पू. में जनता की भाषा संस्कृत से दूर होती चली गई, जिसके यथेष्ट प्रमाण मिलते हैं। इस समय से मध्यकालीन अर्यभाषा का प्रारम्भ होता है। इस समय मौखिक भाषा के पांच रूप उत्तर भारत में मिलते हैं। इनमें मध्य देशीय मौखिक रूप में सबसे अधिक साहित्य चर्चा मिलती है। जिस भाषा में यह चर्चा है, वह 'पाली' नाम से प्रसिद्ध है। अन्य भाषाओं में साहित्यिक रचना नहीं मिलती। अगले 500 वर्षों में भाषा और विकसित हुई तथा उसका नाम प्राकृत रखा गया। विभिन्न मौखिक भाषा रूपों से भिन्न-भिन्न प्राकृतें निकलीं। उदीची (उत्तरी) के दो रूप हुए : (1) ब्राचड़ और (2) कैकेय। प्रतीची (पश्चिमी) का एक ही रूप रहा - अवन्ती प्राकृत। मध्यदेशीय का भी एक ही रूप रहा - शौरसेनी प्राकृत। प्राच्य के दो रूप हुए : (1) अर्द्ध मागधी, (2) मागधी प्राकृत। दक्षिणी का एक रूप रहा - महाराष्ट्री प्राकृत।

यह स्थिति 001 ई.पू. से 500 ई. तक की है। इसके बाद 500 वर्षों में वह पुनः विकसित हुई। ब्राचड़ प्राकृत का रूप विकसित होकर ब्राचड़ अपभ्रंश कहलाया। इस प्रकार कैकेय प्राकृत से कैकेय अपभ्रंश, अवन्ती से नागर अपभ्रंश, शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्रंश, अर्द्धमागधी प्राकृत से अर्द्धमागधी अपभ्रंश, मागधी से मागधी तथा महाराष्ट्री प्राकृत से महाराष्ट्री अपभ्रंश का विकास हुआ। यह स्थिति मध्य आर्यभाषा काल 1000 ई. तक की है। इस समय अपभ्रंश भाषा का ही विकास हुआ और उससे आधुनिक आर्यभाषाएँ विकसित हुईं। आधुनिक आर्यभाषाओं में सिंधी ब्राचड़ अपभ्रंश से; लहंदा तथा पंजाबी कैकेय अपभ्रंश से; गुजराती, राजस्थानी तथा पहाड़ी नागर अपभ्रंश से; पश्चिमी हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश से; पूर्वी हिन्दी अर्द्धमागधी से; बिहारी, बांग्ला तथा ओड़िया मागधी अपभ्रंश से तथा मराठी महाराष्ट्री अपभ्रंश से विकसित हुईं इस प्रकार हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का विकास नागर, शौरसेनी, अर्ध मागधी तथा मागधी अपभ्रंश से हुआ है। भारतीय आर्यभाषाओं के विकास को निम्न आरेख से समझा जा सकता है। देखिए वंशवृक्ष-2

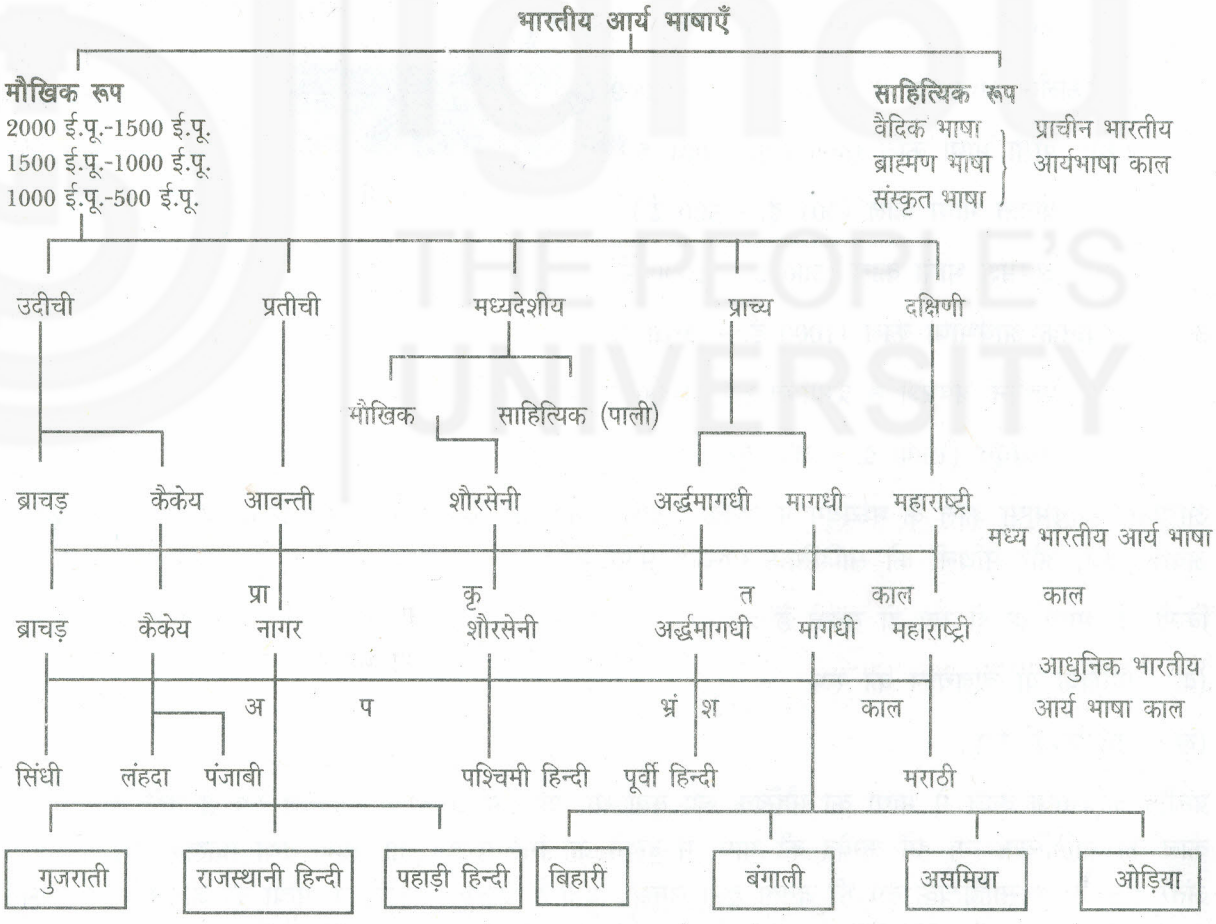

1.4 भारतीय भाषाएँ और हिन्दी : अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या

भारत की संश्लिष्ट भाषिक तथा सामाजिक संरचना के कारण विद्वानों ने कभी तो भारतवर्ष को भाषा सामाजिक विकट विग्रह (सोशियो लिंग्विस्टिक जाईट) तो कभी भाषिक सामाजिक इकाईयों के मूल में विद्यमान एकात्मकता

के कारण इसे एक 'भाषिक क्षेत्र' (लिंग्विस्टिक एरिया) की संज्ञा से अभिहित किया है। भारतीय जनगणना के अनुसार भारत में चार भाषा परिवारों (भारोपीय, द्रविड़, मुंडा या ऑस्ट्रिक तथा तिब्बती-चीनी परिवार) की 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से 1455 भाषाएँ ऐसी हैं जिनके बोलने वालों की संख्या दस हजार से कम हैं। शेष 197 भाषाओं में से देश की चौदह भाषाओं को भारत के संविधान निर्माताओं ने देश की प्रधान भाषा मानकर अष्टम् अनुसूची में रखा था। ये भाषाएँ थीं - 1. असमिया, 2. ओड़िया, 3. उर्दू, 4. कन्नड़, 5. कश्मीरी, 6. गुजराती, 7. तमिल, 8. तेलगु, 9. पंजाबी, 10. बांग्ला, 11. मराठी, 12. मलयालम, 13. संस्कृत, 14. हिन्दी। इन 14 भाषाओं के बोलने वालों की संख्या देश की संकुल जनसंख्या का 98 प्रतिशत थी। कालान्तर में अष्टम् अनुसूची में सिंधी जुड़ी और बाद में नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी जोड़ दी गई। अब अष्टम् सूची में देश की 18 भाषाओं की गणना होती है। और 1991 की जनगणना के अनुसार इन भाषाओं के बोलने वालों की संख्या देश की जनसंख्या का 99. 92 प्रतिशत है। निष्कर्षतः आज देश की प्रधान भाषाएँ बाइस हैं। ये भाषाएँ विश्व के तीन भाषा परिवारों - भारोपीय परिवार जिसके अंतर्गत असमिया, ओड़िया, उर्दू, कश्मीरी, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला मराठी, सिंधी, कोंकणी, नेपाली, संस्कृत व हिन्दी, द्रविड़ परिवार जिसके अंतर्गत तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड़ तथा तिब्बती-चीनी परिवार की मणिपुरी हैं।

इन प्रधान भाषाओं में हिन्दी केन्द्रीय महत्व की भाषा बनी। उसे राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा संपर्क भाषा का गौरव मिला। इसका कारण था कि हिन्दी क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से देश के सबसे बड़े भूभाग की भाषा है। यह देश के ग्यारह प्रदेशों - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल, हरियाणा, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखंड, दिल्ली तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह की प्रधान भाषा है; इसके बोलने वालों की संख्या देश की जनसंख्या का 42.88 प्रतिशत है तथा व्यापार, जन संचार तथा राजनीति की दृष्टि से यह देश की संपर्क भाषा है। इसीलिए देश की भाषाओं में हिन्दी प्रतिनिधि भाषा मानी गई संभवतः यही कारण है कि जहाँ अन्य भारतीय भाषाएँ अपने-अपने क्षेत्रीय नामों से जानी जाती हैं - पंजाबी, पंजाब की भाषा; मराठी, महाराष्ट्र की; बांग्ला, बंगाल की; असमिया, असम की; तमिल, तमिलनाडु की वहीं हिन्दी, हिन्द की या हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तान की भाषा कही जाती है। हिन्दी की इसी व्यापकता को देखकर महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा की संज्ञा दी थी और देश के सभी नेताओं ने जो प्रमुखतः हिन्दी प्रदेश के थे, हिन्दी का समर्थन किया था, उसके व्यापक प्रचार-प्रसार की योजना बनाई थी तथा वह देश के स्वाधीनता आंदोलन में शंखनाद की भाषा भी बनी थी।

भारत की अधिकांश भाषाएँ चाहे वे किसी भी भाषा परिवार से सम्बन्धित हों, उनमें अद्‌भुत समानता है। भारत की 18 प्रमुख भाषाएँ जिनकी गणना भारतीय संविधान की अष्टम् अनुसूची में हैं, वे तीन भाषा परिवारों, भारोपीय परिवार, द्रविड़ परिवार तथा तिब्बती-चीनी परिवार की भाषाएँ हैं। चौथे भाषा परिवार मुण्डा परिवार की प्रधान भारतीय भाषा सन्थाली है। भारतीय भाषाओं का अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि भारोपीय परिवार की भारतीय भाषाएँ अपने परिवार की अन्य भाषाओं की अपेक्षा भारत के दूसरे परिवार की भाषाओं से समानता रखती हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी, भारोपीय परिवार की आधुनिक भारतीय आर्यभाषा है। उसमें तथा द्रविड़ परिवार की भाषा तमिल में कई समानताएं हैं जबकि भारोपीय परिवार की यूरोपीय भाषाओं अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच में वे समानताएं नहीं हैं। इस प्रकार हिन्दी अलग परिवार की भाषा तमिल के अधिक निकट है जबकि अपने ही परिवार की अंग्रेजी, जर्मन आदि से दूर। इसी प्रकार हिन्दी और तमिल की समानता मुण्डा परिवार की भाषाओं में देखी जाती है। अपने परिवार की भाषाओं के अतिरिक्त विभिन्न भाषा परिवारों की भारतीय भाषाओं की यह समानता विभिन्नता में एकता के सिद्धांत को पुष्ट करती है।

भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को यदि हम देखें तो हमें अद्‌भुत समानताएं दिखती हैं जो नितांत संयोग न होकर उन भाषाओं के सांस्कृतिक सामाजिक सम्बन्धों की द्योतक हैं और बाहरी विभिन्नता तथा आंतरिक एकता को पुष्ट करती है। यह समानता ध्वनि, शब्द, वाक्य तथा लिपि सभी स्तर पर दिखाई पड़ती है।

भारतीय भाषाओं में चाहे वे किसी भी भाषा परिवार की हों उनकी ध्वन्यात्मक व्यवस्था में एक समानता दिखती है। आर्यभाषा परिवार की आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं तथा द्रविड़ परिवार की भाषाओं का वर्णमाला क्रम एक ही है। अ से अः तक के स्वर तथा क से ह तक के व्यंजन। द्रविड़ परिवार की प्राचीन तथा प्रधान भाषा तमिल में भी जिसमें व्यंजनों की संख्या सीमित है, वर्णमाला भी देवनागरी से नितांत भिन्न है पर दोनों भाषाओं की

वर्णमाला में व्यंजनों का क्रम हिन्दी के समान हैं। तमिल में व्यंजनों का क्रम क ङ च ञ ट ण त न प म य र ल व श ल़ ऱ ऩ हैं। अंतिम चार व्यंजनों को छोड़कर जो तमिल की विशिष्ट ध्वनियां हैं, शेष सभी व्यंजनों का वर्ण देवनागरी की वर्णमाला के ही समान है।

हिन्दी स्वर वर्णमाला में ह्रस्व तथा दीर्घ के क्रम की व्यवस्था है। उदाहरणार्थ ।अ। तथा ।आ।, ।इ। तथा ।ई, ।उ। तथा ।ऊ। यह क्रम व्यवस्था सभी भारतीय भाषाओं में दिखती है। भारोपीय परिवार की यूरोपीय भाषाओं में स्वर वर्णमाला में यह क्रम नहीं दिखता।

भारतीय भाषाओं में व्यंजनों का क्रम अधिक वैज्ञानिक है। गले से होंठ तक के स्थानों से उच्चरित व्यंजनों में भी क्रम व्यवस्था दिखाई पड़ती है। (क वर्ग, च वर्ग तथा प वर्ग के क्रम में) इस वैज्ञानिक व्यंजन क्रम व्यवस्था के कारण भारतीय भाषाओं में बहुत कम अंतर आया तथा साम्य बना रहा।

।ट। का उच्चारण भारतीय भाषाओं की विशेषता है। भारोपीय परिवार की अन्य किसी यूरोपीय भाषा में ।ट। वर्ग की ध्वनियों का उच्चारण नहीं दिखता। ।ट। वर्ग की ध्वनियां भारोपीय, द्रविड़ तथा मुण्डा परिवार की भाषाओं में भी है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि ।ट। वर्ग की ध्वनियां संस्कृत में तथा आधुनिक आर्य भाषाओं में द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव से आईं। भारत की भाषाओं में ।त। और ।ट।, इसी तरह ।द। और ।ड। ध्वनियां ध्वनिग्रामिक हैं जबकि यूरोप की भाषाओं में ।t। ।d। का उच्चारण है। इसी तरह ।ष। और ।ण। भी भारतीय भाषाओं की विशेषता है।

महाप्राण ध्वनियाँ भारतीय भाषाओं की विशेषता है। वस्तुतः पहले की सभी भारोपीय भाषाओं में महाप्राण व्यंजनों का उच्चारण था जिसे उन भाषाओं ने बाद में छोड़ दिया। संस्कृत में यह उच्चारण सुरक्षित रहा जिससे वह अन्य भारतीय भाषाओं में आया। द्रविड़ परिवार की भाषाओं ने भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं की इस विशेषता को अपना लिया।

हर वर्ग की नासिक्य ध्वनि, उनका उच्चारण, उनकी ध्वनिग्रामिता भारतीय भाषाओं की विशेषता है जबकि यूरोप की भाषाओं में दो ही नासिक्य व्यंजन ।न। तथा ।म। रह गए हैं। भारतीय भाषाओं में ।ङ।, ।ञ।, ।ण।, ।न।, ।म। पांच नासिक्य व्यंजन मिलते हैं।

शब्द स्तर पर हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में समानता दिखती है। हिन्दी का शब्द समूह प्रधानतः भारतीय आर्य भाषा का शब्द समूह है। हिन्दी में बहुत से शब्द अविकल रूप में संस्कृत से आए - अग्नि, नभ, वायु, जल, धरती, माता, पिता, धर्म, कर्म, जन्म, मृत्यु आदि। कुछ शब्द संस्कृत से पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश से होते हुए हिन्दी में आए और अन्य भारतीय भाषाओं में भी पहुंचे। संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ध्वन्यात्मक परिवर्तन लेकर आए वे तद्भव शब्द कहलाए जैसे अग्नि से आग, पूर्व से पूरब, दंत से दांत, मयूर से मोर, चतुर्दश से चौदह, कृष्ण से कान्हा, रात्रि से रात। हिन्दी में देशज शब्दों में उन शब्दों की गणना होती है जिनके स्रोत की आज हमें कोई जानकारी नहीं है। ऐसे शब्द मूलतः देश में उत्पन्न (देशज) या बने हुए क्षेत्रीय शब्द माने गए। पेड़, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, झगड़ा, झूठ, लड़का आदि इसी वर्ग के शब्द हैं।

हिन्दी चूंकि एक व्यापक क्षेत्र की भाषा है और हिन्दी बोलने वाले लगभग सारे देश में फैले हुए हैं इसलिए स्वाभाविक है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं से भी शब्द हिन्दी ने लिए हों। इन शब्दों में कहीं तो ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुआ तो कहीं उन्हें उसी रूप में ग्रहण कर लिया गया। हिन्दी की सीमावर्ती भारतीय भाषाएँ पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, तेलुगु, ओड़िया, बांग्ला, नेपाली आदि है। हिन्दी ने उपन्यास, गल्प, धन्यवाद बांग्ला से, वाङ्मय, लागू, चालू, प्रगति, मराठी से, हड़ताल गुजराती से, छोले, भठूरे पंजाबी से लिए।

भारतीय भाषाओं में आयातित इस शब्दावली की एक विशेषता और भी है कि भारतीय भाषाओं ने तत्सम, तद्भव आदि संस्कृत शब्दों तथा फारसी, अरबी आदि भाषाओं से आए हुए शब्दों के साथ उनकी रूप रचना भी ग्रहण की है तो वहीं उन्हें अपनी रूप रचना में भी ढाला है। विदेशी प्रत्ययों और उपसर्गों को लेकर हम भारतीय भाषाओं में शब्दों का निर्माण भी करते हैं। उदाहरणार्थ हिन्दी में बेसुरा, नासमझ, चूड़ीदार गुजराती - बेमान (बेहोश), धारदार (पैना)। इस समान शब्द निर्माण पद्धति के कारण भारतीय भाषाओं की पारिवारिक बोधगम्यता भी बढ़ी है।

भारतीय भाषाओं में नित बढ़ता पारिभाषिक शब्दावली का भंडार भी भारतीय भाषाओं को और निकट लाता जा रहा है। सभी भारतीय भाषाएँ विज्ञान, शिक्षा, विधि, प्रशासन, प्रबंधन आदि के क्षेत्र में भाषा की समृद्धि के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता अनुभव करती हैं। हम पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए सामान्यतः संस्कृत का सहारा लेते हैं क्योंकि संस्कृत के पास समृद्ध और विशाल शब्द भंडार तो है ही साथ ही संस्कृत की सहायता से बनाए गए शब्द भारतीय भाषाओं में अनेक हैं। उदाहरणार्थ - दूरभाष, दूरदर्शन, दूरलेख, दूरमुद्रक, दूरेक्ष। राष्ट्रपति, परिप्रेक्ष्य, संक्रांति, संचार व्यवस्था, सम्प्रेषण, मानव संसाधन। अंग्रेजी से लिए गए पारिभाषिक शब्दों की भी हिन्दी में कमी नहीं है - अकादमी, यूनियन, स्ट्राइक, रॉकेट, मिसाइल, कैप्स्यूल, लेजर, एक्सरे आदि।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समान पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग और सम्प्रेषण सीमा का विस्तार भाषाओं को निकट लाता है। भाषा भाषियों के ज्ञान क्षेत्र के विस्तार के साथ पारिभाषिक शब्दावली का व्यवहार बढ़ता है और यह पारिभाषिक शब्द व्यवहार का विस्तार भारतीय भाषाओं को समर्थ तो बना ही रहा है उन्हें निकट लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो और उसका मानकीकरण भी हो।

वाक्य संरचना भाषा विश्लेषण का जटिल पक्ष है। विविध भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता या अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या के लिए यहां भारतीय भाषाओं की वाक्य संरचनागत समानता के कुछ उदाहरण दिए गए हैं। अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग पदक्रम होते हैं। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही भारोपीय परिवार की भाषाएँ हैं। अंग्रेजी भाषा के वाक्य में पद क्रम कर्त्ता + क्रिया + कर्म है किंतु हिन्दी भाषा में पद क्रम कर्त्ता+कर्म+क्रिया का है। अंग्रेजी भाषा का ही पदक्रम जर्मन, फ्रांसीसी, स्पेनी आदि भाषाओं में भी मिलता है किंतु विलक्षण बात यह है कि हिन्दी का पद क्रम अपने परिवार की यूरोपीय भाषाओं से भिन्न किंतु भारतीय भाषाओं के समान है। हिन्दी वाक्य रचना का पदक्रम भारतीय आर्यशाखा की भाषाओं में, द्रविड़ भाषाओं में तथा मुण्डा परिवार की भाषाओं में भी मिलता है।

पदक्रम के साथ ही पदक्रम से जुड़ी एक दूसरी विशेषता पदबंध के भीतर शब्दों के क्रम में भी है। हिन्दी में हम संज्ञा शब्दों के बाद कारक चिह्नों का प्रयोग करते हैं, इसलिए इन कारक चिह्नों को परसर्ग भी कहा जाता है। परसर्ग का अर्थ है बाद में जोड़ा जाने वाला अंश जैसे - जेब में (in the pocket), बाजार को (to the market), घर के लिए (for the home)। फारसी भाषा में भी पूर्वसर्ग का प्रयोग होता था जैसे दरअसल (असल में), ताजिंदगी (जिंदगी भर), सिवाय आप (आप के सिवा)। संभवतः पूर्वसर्ग आर्य भाषाओं की सामान्य विशेषता थी किंतु लगता है कि भारतीय आर्य भाषाओं में ही परसर्ग का विकास हुआ। भारतीय आर्य भाषा, द्रविड़ भाषाओं तथा तिब्बती बर्मी वर्ग की भारतीय भाषाओं (मणिपुरी आदि) में परसर्ग का प्रयोग होता है और इस प्रकार सभी भारतीय भाषाएँ परसर्ग भाषाएँ कही जा सकती है।

क्रिया रचना में भी पद व्यवस्था की ओर यदि ध्यान दिया जाए तथा अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की इस व्यतिरेकी अक्ष से तुलना की जाए तो हम देखते हैं कि हिन्दी भाषा में मुख्य क्रिया वाचक शब्द पहले आता है और सहायक क्रिया बाद में तथा अंग्रेजी में मुख्य क्रिया शब्द क्रिया पदबंध के अंत में आता है तथा सहायक क्रिया पहले। तुलना कीजिए -

क. यह कहा जा चुका है /this has been said/

ख. काम किया जा रहा है /the work is being done/

सभी भारतीय आर्य भाषाओं और द्रविड़ भाषाओं में क्रिया रचना का यह रूप समान है। इनमें मुख्य क्रिया पहले आती है, सहायक क्रिया बाद में। रंजक क्रिया की दृष्टि से भी सभी भारतीय भाषाओं में एकरूपता है। 'करना' मूल क्रिया है। इसी क्रिया से कर लेना, कर देना, कर डालना, कर गुजरना, कर रखना आदि रंजक क्रियाएं बनी हैं। भारोपीय परिवार की यूरोपीय भाषाओं में रंजक क्रिया का विधान नहीं है। संस्कृत में भी रंजक क्रियाएं नहीं हैं। यह विशेषता केवल आधुनिक भारतीय भाषाओं में दिखती है। कई विद्वानों का यह भी विचार है कि रंजक क्रियाएं द्रविड़ भाषाओं की विशेषता थीं तथा वहीं से अन्य भारतीय भाषाओं में पहुंचीं। प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना द्रविड़ और आर्य दोनों परिवार की आधुनिक भारतीय भाषाओं में समान हैं। अंग्रेजी में प्रेरणार्थक क्रियाएं अलग होती है, मूल क्रिया के रूप में परिवर्तन कर नहीं बनतीं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

बनना	/to get built/	लिखना/to write/
बनाना	/to construct/	लिखाना /to dictate/
बनवाना	/to get it constructed by someone/	लिखवाना /to make some one write/
पढ़ना	/to study	खाना/to eat/
पढ़ाना	/to teach/	खिलाना /to feed/
पढ़वाना	/to get taught/	खिलवाना /to get some one fed/

मौखिक अभिव्यक्ति को देश और काल की सीमा से मुक्त करने के लिए मानव ने लिपि का आविष्कार किया। फारसी लिपि पर आधारित कश्मीरी, सिंधी तथा उर्दू को छोड़कर भारतीय भाषाओं में नौ लिपियां हैं। ये सभी नौ लिपियां ब्राह्मी लिपि से निकली हैं इसलिए इनमें वर्णों की समानता दिखती है, लेखन प्रवृति भी एक जैसी है। हिन्दी, मराठी तथा संस्कृत की लिपि देवनागरी है। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, पंजाबी (गुरुमुखी), बांग्ला (जो असमिया तथा मणिपुरी के लिए प्रयुक्त होती है) भाषाओं की अलग-अलग लिपियां हैं। विकास क्रम में इनके वर्णों में परिवर्तन तो हुआ फिर भी स्पष्ट साम्य झलकता है।

भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में भाषिक स्तर पर समानता हिन्दी और भारतीय भाषाओं के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या करती है। भारतीय भाषाओं की इस मूलभूत एकता का कारण देश की सांस्कृतिक एकता है। धर्म, दर्शन, साहित्य कला तथा संस्कार की एकता भाषायी एकता को सुदृढ़ करती है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी व्याकरणिक विशेषाएं हैं, उनकी अपनी लिपियाँ हैं, उनकी अपनी समृद्ध साहित्यिक परम्पराएं हैं किंतु उनमें पारस्परिक समानताएं भी हैं जो भाषिक बोधगम्यता बढ़ाती हैं और सभी को एक दूसरे से जोड़े हुए हैं जिससे हम भारत को एक बृहत् भाषायी क्षेत्र के रूप में देखते हैं।

भारतीय भाषाओं और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को प्रमाणित करने से अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय भाषाओं और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को कैसे और अधिक प्रगाढ़ और प्रबल बनाया जा सकता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष निदेश दिया गया है। मंत्र रूप में यह निदेश भारतीय भाषाओं और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्ध की ओर संकेत तो करता ही है, साथ ही यह भी बताता है कि हिन्दी का विकास तथा भारतीय भाषाओं का विकास अन्योन्याश्रित है।

भारतीय भाषाओं और हिन्दी के अंतर्सम्बन्धों का साहित्यिक तथा भाषिक स्तर पर संक्षिप्त विवेचन इकाई में किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि संविधान की अष्ट्म अनुसूची में जिन 22 भाषाओं की गणना है उनमें अन्य भारतीय भाषा के साथ हिन्दी की भी गणना है जिसका राजभाषा के रूप में अनुच्छेद 343(1) में पहले ही उल्लेख हो चुका है। इसी प्रकार संस्कृत की भी गणना है जो आधुनिक भाषा नहीं है और न ही मौखिक व्यवहार में उसका प्रयोग होता है। यह संभवतः इसलिए है कि हिन्दी तथा संस्कृत दोनों भाषाएँ सभी भारतीय भाषाओं की पोषक हैं और इन दोनों का ही सहयोग भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अनिवार्यता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी के प्रचार-प्रचार के लिए दिया गया निदेश यह संकेत देता है कि हिन्दी तभी सबल होगी और भारत का सच्चा एवं पूर्ण प्रतिनिधित्व कर सकेगी, जब वह भारत की सामाजिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बने और यह तब संभव होगा जब वह भारतीय भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए अपने शब्द भंडार को प्रमुखतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भारतीय भाषाओं से समृद्ध करे।

1.5 सारांश

भारत एक महादेश है। यह अनेक संस्कृतियों का देश है और एक बृहत भाषायी क्षेत्र है। भारत की सभी भाषाएँ अपने भाषिक तथा साहित्यिक वैशिष्ट्य के साथ अन्तर्गुम्फित भी हैं। उनकी भाषिक समानताएं और उनके संस्कार,

उनकी जीवन दृष्टि उन्हें परस्पर जोड़े हुए है। इन अन्तर्सम्बन्धों की प्रगाढ़ता और सुदृढ़ता में ही भारतीय भाषाओं का विकास और विस्तार निहित है। प्रस्तुत इकाई में हमने भारतीय भाषाओं के विषय में अध्ययन करते हुए भारतीय-आर्य भाषा परिवार के विषय में विस्तार से जाना। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए इकाई 2 में हम द्रविड़ भाषा परिवार के विषय में विस्तार से चर्चा करेंगे।

1.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. भारत में बोली जाने वाली अधिकांश भाषाएँ किस भाषा परिवार से सम्बन्धित हैं? उस भाषा परिवार तथा सभी भाषाओं के नाम बताइए।
2. भाषा के मौखिक तथा साहित्यिक रूप में क्या अंतर है? ये भाषा के विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
3. हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में किन-किन स्तरों पर समानता है? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें।
4. हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अन्तर्सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने के लिए भारतीय संविधान में क्या व्यवस्था है?
5. भारतीय-आर्य भाषा परिवार पर एक लेख लिखिए।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- फर्ग्युसन, सी.ए, 1966, *नेशनल सोशल लिंग्विस्टिक प्रोफाइल फार्मूलाज,* लिंग्विस्टिक सं. ब्राइट।
- एमेन्यु एम.बी, 1966, *इंडिया ए. लिंग्विस्टिक एरिया,* लैग्वेज इन सोसाइटी (हाइम्स)।
- सेंसज आफ इंडिया, 1967, नई दिल्ली, *वाल्यूम 1, पार्ट (II) सी (II)*।
- सेंसेज ऑफ इंडिया, 1991, *सिरीज 1-भारत पार्ट IV बी (आ.ई) (ए) टेबल सी,* भारत, राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश।
- चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार, 1963, *भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

इकाई 2 द्रविड़ भाषा परिवार

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 नामकरण

2.3 द्रविड़ भाषिक समुदाय के मूल स्थान का प्रश्न

2.4 शब्द-भण्डार : ऐतिहासिक साक्ष्य

2.5 संस्कृत और द्रविड़ भाषाएँ

2.6 भाषा-क्षेत्र (क्षेत्र विस्तार)

2.7 परिवार के रूप में द्रविड़ भाषाएँ

2.7.1 भाषिक विशेषताएँ

2.8 सारांश

2.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.10 शब्द सूची

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे:

- द्रविड़ भाषा परिवार के उद्‌भव एवं नामकरण;
- द्रविड़ भाषा परिवार की मूल भाषाओं के साथ-साथ अन्य भाषाएँ;
- भारतीय भाषाओं में द्रविड़ भाषाओं का स्थान;
- द्रविड़ भाषाओं का क्षेत्र; और
- द्रविड़ भाषाओं की भाषिक विशेषताएँ।

2.1 प्रस्तावना

भारत में भारोपीय भाषा-परिवार के बाद दूसरे भाषा-परिवार के रूप में द्रविड़ भाषा-परिवार महत्वपूर्ण है। यह विश्व का पाँचवा बड़ा भाषा-परिवार है। विश्व के अलग-अलग भागों मुख्यतः दक्षिणी एशिया में लगभग 200 मिलियन लोग द्रविड़ भाषा-परिवार से जुड़ी भाषाएँ बोलते हैं। इस भाषा-परिवार में लगभग 26 भाषाएँ शामिल हैं, साथ ही साथ लगभग बीस ऐसी भाषाएँ शामिल हैं जिनमें साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत इकाई में हम द्रविड़ भाषा परिवार से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे।

2.2 नामकरण

इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग रॉबर्ट कॉडवेल ने 1856 के आसपास 'Dravidian' के रूप में किया। यह शब्द संस्कृत के 'द्राविड़' का परिवर्तित रूप है जिसका प्रयोग परम्परागत रूप से तमिल भाषा और लोगों के लिए किया जाता था। रॉबर्ट कॉडवेल इस बात को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि 'द्राविड़' शब्द के प्रभाव से ही 'Dravidian' शब्द

बना। इस शब्द का प्रयोग तमिल भाषा और लोगों के लिए होता था। वे स्वीकार करते हैं कि इस शब्द और नामकरण को लेकर मतभेद हो सकते हैं। इस शब्द का प्रयोग संस्कृत भाषाशास्त्रियों द्वारा दक्षिण भारतीय लोगों और भाषाओं के लिए होता था।

कॉडवेल इस शब्द के स्रोत का सूत्र देते हैं कि भाषा के रूप में इस शब्द का प्रयोग कुमारिल भट्ट के 'तंत्रवार्ट्टिका' में मिलता है। इस शब्द का प्रयोग मनुस्मृति, भरत के नाट्यशास्त्र और महाभारत में भी मिलता है। इनमें 'द्राविड़' शब्द का प्रयोग लोगों के संदर्भ में और 'द्राविड़ी' शब्द का प्रयोग 'पैशाची' से विकसित लघु प्राकृत भाषा के अर्थ में हुआ है।

2.3 द्रविड़ भाषिक समुदाय के मूल स्थान का प्रश्न

द्रविड़ भाषिक समुदाय के मूल स्थान के प्रश्न पर इतिहासकारों और भाषाविदों ने विभिन्न दृष्टियों से विचार किया है। इस संदर्भ में कॉवल्ली-स्फोरशा (Cavalli-Sforza) कहते हैं -

'द्रविड़ भाषाओं की उत्पत्ति का केन्द्र पश्चिमी भारत में कहीं हो सकता है। यह केन्द्र दक्षिणी भारत में भी हो सकता है। उत्तरी भारत में यह भाषा-परिवार बिखरे हुए रूप में मिलता है और पश्चिमी पाकिस्तान में ब्राहुई के रूप में।'

Cavalli-Sforza, L.L. 2000, Genes, People and Languages

कॉवल्ली-स्फोरशा द्रविड़ भाषाओं का सम्बन्ध सिंधु घाटी की सभ्यता से भी जोड़ते हैं। वस्तुतः इस तथ्य का कोई पुरातात्विक या भाषा वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं मिलता कि कब द्रविड़ भाषा बोलने वाले लोग भारत में आए। किन्तु इस तथ्य के प्रमाण हैं कि ईसा पूर्व 15वीं शताब्दी के आसपास जब ऋग्वैदिक आर्यों ने उत्तरी पश्चिमी भारत में प्रवेश किया, तब ये भारत में थे।

बिना किसी साक्ष्य के अधिकतर विद्वान इस बात को स्वीकार करते हैं कि आर्यों के आगमन से लगभग दो शताब्दी पूर्व द्रविड़ उत्तर पश्चिमी क्षेत्र की ओर से भारत में आए। रसमुस रस्क (Rasmus Rask) ने सबसे पहले यह विचार प्रस्तुत किया कि उत्तर एशिया और यूरोप की आदिम जनजातियों से इनका सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है।

डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या मानते हैं - 'द्रविड़ लोग भूमध्य जातियों की विभिन्न शाखाओं के प्रतिनिधि थे।'

(भारतीय आर्य भाषाएँ और हिन्दी)

कुछ विद्वानों की यह भी मान्यता है कि मूल द्रविड़-भाषी लोग पश्चिम के निवासी थे। उनका मूल निवास पूर्वी भूमध्य सागर के कुछ अंचल, एशिया माइनर का लिकिया प्रदेश तथा क्रीट द्वीप समूह था। द्रविड़ों का प्राचीन नाम 'द्रमिझ' या 'द्रमिल' मिलता है, जिससे आर्य भाषा के द्रमिड़, द्रविड़, द्रमिल तथा तमिल शब्द निकले। द्रविड़ साहित्य के विश्लेषण से पता चलता है कि वह ईसा की प्रथम सहस्राब्दी के मध्य का है। किन्तु आर्यों के भारत तथा भारत के बाहर के द्रविड़ों के सम्पर्क में आने का काल ई.पू. दूसरी सहस्राब्दी का मध्य अनुमानित किया गया है।

इस सबका निष्कर्ष देते हुए कहा जा सकता है कि ये सब परिकल्पनाएँ अनुमान पर आधारित हैं। कोई भी प्रामाणिक और प्रभावी परिकल्पना अभी तक सामने नहीं आई। पूर्व-द्रविड़ों के भारत में प्रवेश को लेकर जितने भी अनुमान लगाए जाते रहे हैं वे सब इस तथ्य पर आधारित हैं कि पूर्व द्रविड़ों के प्रथम विभाजन का परिणाम थी 'ब्राहुई' और माना जाता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता का जुड़ाव द्रविड़ों से है। यह भी माना जाता है कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की सभ्यता मूलतः द्रविड़ों द्वारा ही बसाई हुई थी। बिलोचिस्तान की ब्राहुई जाति भी द्रविड़ ही थी।

डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का अनुमान है कि 'आर्यों के आगमन से पूर्व द्रविड़ों ने ही पंजाब और सिंध की महान् नागरिक सभ्यताओं का निर्माण किया था।' कुल मिलाकर इस तथ्य को माना जा सकता है कि द्रविड़ भारत के मूल निवासी थे। जिस समय आर्यों ने भारत में प्रवेश किया उस समय द्रविड़ भारत के पश्चिम और पश्चिमोत्तर प्रदेश में रहते थे। 1500 ई.पू. के आसपास आर्यों के भारत में प्रवेश के बाद वे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैल गए।

2.4 शब्द-भण्डार : ऐतिहासिक साक्ष्य

संस्कृत के प्राचीनतम रूप ऋग्वैदिक संस्कृत में द्रविड़ मूल के कई शब्द ऐसे मिलते हैं जिनके आधार पर यह मान्यता विकसित हुई कि 1500 ई.पू. के आसपास आर्यों के भारत में प्रवेश के पूर्व उत्तर-पश्चिमी भारत में द्रविड़ों का वास था। ऋग्वैदिक काल में संस्कृत में मूर्धन्य व्यंजनों (Retroflex Consonants) का श्रेय भी संस्कृत भाषी लोगों के द्रविड़ भाषियों के साथ सम्पर्क को जाता है। रूसी विद्वान निकिता गुरोव (Nikita Gurov) के अनुसार ऋग्वेद में द्रविड़ मूल के लगभग अस्सी शब्द हैं।

कॉडवेल और कई अन्य विद्वानों ने ग्रीक, लेटिन और हिब्रू में कई ऐसे शब्दों की खोज की है जिनके विषय में वे मानते हैं कि ये मौलिक रूप से द्रविड़ शब्द हैं। किन्तु इस तरह की मान्यताओं की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

2.5 संस्कृत और द्रविड़ भाषाएँ

ध्वनि, व्याकरण, शब्द आदि अनेक दृष्टियों से द्रविड़ भाषाओं का संस्कृत पर प्रभाव अनेक भाषाविद्‌ों ने लक्षित किया। कई विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि संस्कृत में 'ट' वर्गीय ध्वनि का विकास द्रविड़ प्रभाव से ही आया। संयुक्त क्रियाएँ, परसर्ग और तुलनात्मक विशेषण भी द्रविड़ों की ही देन है। अणु, कला, गण, नाना (अनेक), पुष्प, बीज, रात्रि, सायं, तंडुल, मर्कट, शव, श्रेष्ठिन्, झड़ी, झगड़ा, सीप, खूँटा, वेतस्, शंख, कुंतल, वेणी, तुण्ड, दण्ड, पिण्ड, कुठार, मुकुट, मंच आदि शब्द द्रविड़ भाषा से आर्य भाषा में आए हैं। संस्कृत में अनुकरणात्मक शब्दावली को भी उन्हीं की देन माना जा सकता है।

डा. हरदेव बाहरी के अनुसार समासों की योजना, भविष्यत् काल, दो वचन, दो लिंग, विभक्ति की जगह परसर्ग का प्रयोग, कर्मवाच्य में अतिरिक्त क्रिया और वाक्य योजना के तत्व द्रविड़ भाषा से आए हैं।

2.6 भाषा-क्षेत्र (क्षेत्र-विस्तार)

भाषा-प्रयोक्ताओं की संख्या के आधार पर द्रविड़ भाषा परिवार को विश्व के समस्त भाषा-परिवारों में पाँचवे स्थान पर माना जाता है। द्रविड़ भाषा-परिवार क्षेत्र की दृष्टि से भारत के बहुत बड़े भू-भाग तक फैला है। द्रविड़ भाषा-परिवार के अन्तर्गत आने वाली भाषाओं के क्षेत्र-विस्तार से सम्बद्ध विस्तृत जानकारी इस प्रकार है :

तमिल - श्रीलंका, दक्षिणी अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, मॉरिशस, फीजी, बर्मा, तमिलनाडु
मलयालम - केरल की राजभाषा
कन्नड़ - कर्नाटक की राजभाषा
तेलुगु - आंध्रप्रदेश की राजभाषा
तुलू - कर्नाटक का दक्षिणी कन्नड़ जिला, केरल का पश्चिमी तटीय इलाका
कोड़गु - कर्नाटक का कोड़गु (कुर्ग) जिला, केरल की सीमा से सटा हुआ
इरुल - नीलगिरी पहाड़ियाँ
कुरुम्ब - नीलगिरी पहाड़ियाँ
तोड - नीलगिरी पहाड़ियों का पश्चिमी क्षेत्र
कोट - नीलगिरी शिल्पी

2.7 परिवार के रूप में द्रविड़ भाषाएँ

लगभग 1816 के आसपास फ्रांसिस व्हिट्‌े ऐलिस (Francis Whyte Ellis) ने 'Dissertation on the Telugu Language' नाम से दक्षिण भारतीय भाषाओं पर शोध किया। ऐलिस एक अंग्रेजी लोक सेवा अधिकारी थे। उन्होंने पाया कि उच्च और निम्न तमिल, व्याकरणिक और सामान्य तेलुगु, प्राचीन और आधुनिक कर्नाटकी और कन्नड़ी,

मलयालम और तुलुव मिलकर एक भाषा-परिवार का निर्माण करते हैं, जिन्हें सही रूप में दक्षिण भारत की बोलियाँ कहा जा सकता है।

इससे पूर्व 1786 में सर विलियम जोन्स ने भाषा-परिवार की अवधारणा दी। उसके लगभग तीस वर्ष उपरान्त ऐलिस ने द्रविड़ भाषाओं को एक परिवार के रूप में स्थापित करने की चेष्टा की। अपनी इस परिकल्पना के समर्थन में उन्होंने शाब्दिक और व्याकरणिक दृष्टि से तेलुगु, कन्नड़ और तमिल को इस भाषा-परिवार के अन्तर्गत रखा।

1856 में Comparative Grammer के नाम से राबर्ट कॉडवेल (Robert Coldwell) ने काम किया जिसे द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से जुड़ा पहला प्रवर्तक कार्य कहा जा सकता है। उन्होंने द्रविड़ भाषा-परिवार के अन्तर्गत बारह भाषाओं को स्वीकार किया - तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, तुलू, कोडगू या कुर्ग, तोड, कोटा, गोंदी, कुई, उराऊँ, माल्टो।

कॉडवेल इन भाषाओं में भाषा-परिवार की परिकल्पना के तहत सम्बन्ध जोड़ने में सफल रहे। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कई भाषाएँ द्रविड़ भाषा-परिवार में शामिल की गईं - गोंदी (Driberg 1849), कुई (Letchmajee 1853), कोलामी (Hislap 1866), कोडगू (Cole 1867), तुलू (Brigel 1872), माल्टो (Droese 1884), तोड (Bernhard Schmidt), ब्राहुई (Leech 1838)।

आज लगभग 26 द्रविड़ भाषाएँ ज्ञात हैं, जिन्हें चार वर्गों में विभाजित किया जाता है :

दक्षिणी द्रविड़	- तमिल, मलयालम, इरुला, कुरुम्बा, कोडगू, तोड, कोट, बडग, कन्नड़, कोरग, तुलू
दक्षिणी-मध्य द्रविड़	- तेलुगु, गोंडी, कोंड, कुई, कुवी, पेंगों, मंड
मध्य द्रविड़	- कोलामी, नैक्री, नैकी, पार्जी, ओल्लारी, गडब
उत्तरी द्रविड़	- कुरुक्स, माल्टो, ब्राहुई

2.7.1 भाषिक विशेषताएँ

- इस परिवार की भाषाएँ मुख्यतः अश्लिष्ट योगात्मक हैं। भाषाओं में बड़े से बड़ा समास बनाने की क्षमता है। स्वर-अनुरूपता का गुण विद्यमान है।
- इन भाषाओं में पाँच लघु और पाँच दीर्घ स्वर हैं। केवल नीलगिरि और कोडगू की कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जिनमें स्वनिमिक केन्द्रीय स्वर (Phonemic Centralized Vowels) हैं तथा जिनका विकास द्वित्व व्यंजन से पूर्व प्रारंभिक स्वरों के संस्वनों के परिवर्तित रूप से हुआ। केवल तोड और इरुल में वृत्तमुखी स्वरों का विकास हुआ। किसी भी द्रविड़ भाषा में स्वर बलाघात नहीं है। सामान्यतः बलाघात शब्द के प्रथम स्वर पर होता है चाहे लघु या दीर्घ। शब्दों का प्रारंभ स्वर और व्यंजन दोनों से हो सकता है। ह्रस्व और दीर्घ दोनों प्रकार के स्वर हैं। अन्तिम व्यंजन के बाद अति लघु 'अ' जोड़ा जाता है। मूर्धन्य ध्वनियों की प्रधानता है। माना जाता है कि संस्कृत में 'ट' वर्णीय ध्वनियों का विकास द्रविड़ भाषाओं से ही हुआ।
- 'ऋ' का उच्चारण 'रु' है। अ, इ, उ, अॅ, अॉ स्वरों का प्रयोग अपने दीर्घ रूपों के साथ भी होता है। ऐ, औ क्रमशः अइ, अउ के मेल से बने हैं। अ 'कार' विवृत्त होता है। इनमें कु, चु, टु, तु, पु और अन्तस्थ का क्रम है। ऊष्म और महाप्राण उनमें नहीं है। द्रविड़ वर्णमाला के क-घ के मध्य क के महाप्राण, सघोष और सघोष महाप्राण रूपों का सुन्दर विनिवेश किया गया है।
- द्रविड़ भाषाओं में संरचना की दृष्टि से संयुक्त पद बनाने की प्रवृत्ति है अर्थात् ये भाषाएँ अपनी संरचना में संयुक्त पदीय हैं। शब्दों में पूर्व प्रत्यय और मध्य प्रत्यय नहीं है। शब्दों में व्याकरणिक सम्बन्ध प्रत्ययीकरण और यौगिकता के आधार पर स्थापित होते हैं।
- द्रविड़ संज्ञा शब्दों में विभक्ति रूप नहीं होते। शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते समय अर्थात् पदों का निर्माण करते समय शब्दों के साथ ऐसे परस्थानिक जोड़े जाते हैं जिन्हें अलग भी किया जा सकता है। एकवचन

और बहुवचन का अन्तर केवल यह है कि एकवचन में पर-स्थानिक शब्द के मूल रूप में जुड़ते हैं, बहुवचन में बहुवचन सूचक रूप के बाद। बहुवचन प्रत्यय जुड़ने के बाद सभी संज्ञाएँ चाहे वे किसी वचन या लिंग की हों उन्हीं पर-स्थानिक रूपों को ग्रहण करती हैं जिन रूपों को एकवचन ग्रहण करता है। इन परस्थानिकों को कोई अलग शब्द रूप नहीं माना जा सकता। वे केवल गुण या सम्बन्ध सूचक साधारण संज्ञा शब्द हैं और अर्थ सहायकों के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

शब्द प्रायः स्वरांत होते हैं। शब्द के प्रारंभ में सघोष ध्वनियों के प्रयोग का विधान नहीं है किन्तु स्वर-मध्य स्थिति में घोषत्व आवश्यक हैं, विशेषकर तमिल में।

- कर्त्ता वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होता है और क्रिया अन्त में। विशेषण, विशेष्य से पूर्व आता है, क्रिया विशेषण, क्रिया से पूर्व आता है, क्रिया का कर्म और उसके सब विशेषण क्रिया से पूर्व प्रयुक्त होते हैं। विशेषणात्मक कृदन्त विशेष्य संज्ञा से पूर्व प्रयुक्त होता है। वाक्य का निषेधात्मक अंश सकारात्मक अंश से ठीक पहले आता है। सम्बन्ध कारक वाला शब्द सम्बन्धित से पूर्व प्रयुक्त होता है। पूर्वस्थानिक के स्थान पर पर-स्थानिक जुड़ते हैं और तब कारक-भाव व्यक्त करते हैं। वाक्य का अन्त, क्रिया से किया जाता है। ये द्रविड़ भाषाओं के विशिष्ट लक्षण हैं।

  इन लक्षणों के आधर पर कॉडवेल मानते हैं कि यों द्रविड़ भाषाएँ आर्य भाषाओं से स्पष्टतः इतनी भिन्न हैं कि उन्हें भारतीय-यूरोपीय परिवार से, विशेषकर संस्कृत से पूर्णतः भिन्न परिवार की मानना होगा। यद्यपि युगों तक वे संस्कृत भाषी आर्यों के सामाजिक, धार्मिक सम्पर्क में रही हैं, फिर भी उनकी भिन्न सत्ता में सन्देह नहीं किया जा सकता।

- ज्यूल्स ब्लॉख ने द्रविड़ भाषाओं में प्रश्नार्थक तत्व की अनेकरूपता के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं -

  दोनों वचनों और दोनों लिंगों (स्त्री-पु.) में तमिल में या-र-याअर है ओर कन्नड़ में आर्। ब्राहुई में 'कौन सा' का समानार्थी 'अरा' है, कौन का 'देर'। तुलु में 'क्या' के लिए 'दा-दाने' है। इनका आदि 'द' कार कोई कठिनाई उपस्थित नहीं करता। स्पष्टतः (इ) द् से व्युत्पन्न है। पर 'आ' का हेतु ढूँढना कठिन है। क्या यह माने कि स्वरों का मूल लिंग-कारक मूलक विभाजन लोप का हेतु है? या तमिल के यान्-एन् से तुलना करें? दूसरी तरफ कूर्गी 'येव्', तेलुगू-येरु और ब्राहुई देर् और दे (कौन) को, तथा प्राचीन कन्नड़-तमिल 'एन्' (क्या-क्यों) कन्नड़-एन (कौन सा), तमिल-अन्न, कूर्गी येन्नु, कुइ अनि, कुरुख ने (क्या), तुलू-ना, तमिल-तेलुगू अन्द 'कौन-सा', कुरुख, अैन्दु-अैन्द्रद (अैया), अका, ब्राहुई अन्त (क्या), अन्तइ (क्यों), तमिल अन्नद (अन्दु) आदि का परस्पर अर्थ सम्बन्ध स्पष्ट है। तेलुगू एंमि (क्या), कुइ अॅम, गोंडी (कौन) और वा (क्या), तुलु वा-वोलु (कौन-सा) आदि भेदों का कारण समझना कठिन है।

  ज्यूल्स ब्लॉख के अनुसार - संकेतार्थी तत्व सामान्यतः दूरी के क्रम से है - इ-उ-अ। प्रश्नार्थक में अॅ या य प्राचीन रूप प्रतीत होते हैं पर सामान्यतः अराजकता है। तमिल में इदु, अदु, अन्दु, इन्दु, अन्द भी है और इवन्, अबन्, अॅवन्, आदि भी। इस दूसरे वर्ग में लिंग भेद से वन् का वल् आदि भी होता है। वचन भेद भी होता है - रान्त। वैसे गल् (कल्) से भी बहुवचन द्योतित होता है - हिन्दी के गण, लोग, आदि के समान।

- दो वचन और तीन लिंग हैं। लिंग भेद का आधार प्राणित्व-अप्राणित्व है। लिंग-बोध के लिए पुरुष या स्त्री वाचक शब्द जोड़े जाते हैं। विभक्तियों का काम परसर्गों या प्रत्ययों से लिया जाता है। संज्ञा के अनुसार विशेषणों के रूप नहीं चलते। क्रिया में कृदन्त रूपों की अधिकता है। कर्मवाच्य नहीं होता।

- संज्ञाओं के सचेतन-अचेतन दो भेद होते हैं। सचेतन अर्थात् जिसमें ज्ञान-विवेक की शक्ति हो और अचेतन अर्थात् जिसमें ज्ञान-विवेक की शक्ति न हो।

- संस्कृत और अन्य भारत यूरोपीय भाषाओं में विशेषणों के भी संज्ञा, सर्वनामों के समान रूप चलते हैं। उनके लिंग, वचन, कारक सभी कुछ होते हैं। द्रविड़ भाषाओं में विशेषण के रूप नहीं चलते। विशेषण संज्ञा पर

आधारित नहीं हैं अर्थात् विशेषणों के रूप संज्ञा के अनुसार नहीं चलते। जब वे विशेषण के रूप में विशेष्य के साथ प्रयुक्त न होकर गुण बोधक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं तो उनके भी संज्ञाओं के समान रूप चलते हैं, परन्तु जब वे विशेषण रूप में किसी विशेष्य के पूर्व प्रयुक्त होते हैं तो केवल उससे पूर्व मूल रूप में रख दिए जाते हैं।

- क्रिया में कृदन्त रूपों की अधिकता है। कृदन्ती रूपों में क्रिया के भी लक्षण होते हैं और विशेषण के भी।
- भारत-यूरोपीय भाषाओं में जिस अर्थ को व्यक्त करने के लिए पूर्व-स्थानिक प्रयुक्त होते हैं उसके लिए द्रविड़ भाषाओं में पर-स्थानिक प्रयुक्त होते हैं। उन पर-स्थानिकों को कोई अलग शब्द रूप नहीं माना जा सकता। वे तो केवल गुण या सम्बन्ध के सूचक साधारण संज्ञा शब्द हैं और अर्थ-सहायकों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। क्रिया विशेषण या तो संज्ञा शब्द हैं या ल्यूघादि कृदन्त है और उस क्रिया से पूर्व प्रयुक्त होते हैं जिसके वे क्रिया-विशेषण हैं।
- कर्मवाच्य या भाववाच्य का प्रयोग नहीं होता। उनके भाव को व्यक्त करने के लिए सहायक क्रियाएँ जोड़ी जाती हैं जिनका अर्थ होता है भुगतना या बाध्य होना। संयोजक तत्वों के स्थान पर पूर्वकालिक के प्रयोग की अधिक प्रवृत्ति है।
- सम्बन्ध सूचक सर्वनाम के स्थान पर कृदन्ती रूपों की प्रवृत्ति है। तमिल के वन्द, वन्दाल, वन्दु आदि का अर्थ है आया, आया हुआ, आ चुका या आने वाला।

2.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में हमने द्रविड़ भाषाओं के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की चर्चा की। हमने जाना कि द्रविड़ भाषा परिवार के अंतर्गत भारत के दक्षिणी भाग की लगभग सभी भाषाएँ समाहित होती हैं। इस परिवार की प्रमुख भाषाओं - तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम के अतिरिक्त भी इसमें कई महत्वपूर्ण भाषाएँ है जो दक्षिण भारत में बोली जाती हैं। इसी क्रम में चर्चा करते हुए हमने यहां यह भी जाना कि द्रविड़ भाषा परिवार विश्व का पांचवा बड़ा भाषा परिवार है जिसके अंतर्गत लगभग 26 भाषाएँ बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त यह कि द्रविड़ भाषाओं का उद्‌गम संस्कृत से पूर्व हुआ है। हालांकि इसे लेकर विद्वानों के पास कोई ठोस प्रमाण तो नहीं हैं किन्तु अनुमान के आधार पर यह कहा जाता है कि आर्यों के आगमन के कई वर्ष पूर्व द्रविड़ भारत आए थे।

द्रविड़ भाषाओं के मूल स्थान की चर्चा करते हुए हमने विभिन्न भाषाविदों के मतों का भी अध्ययन किया। स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि द्रविड़ भाषा परिवार न केवल भारत का अपितु विश्व का एक महत्वपूर्ण भाषा परिवार है। अगली इकाई में हम भारत के एक अन्य महत्वपूर्ण भाषा परिवार - ऑस्ट्रिक भाषा परिवार का अध्ययन करेंगे।

2.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाएँ मुख्यतः विश्व के किस भू-भाग में बोली जाती हैं?
2. 'द्राविड़' शब्द का स्रोत और पृष्ठभूमि बताइए।
3. द्रविड़ भाषिक समुदाय का मूल स्थान विद्वानों ने किसे स्वीकार किया है?
4. मूल द्रविड़ भाषी कहाँ के निवासी थे? विद्वानों, इतिहासकारों का क्या मत है?
5. सिंधु घाटी की सभ्यता और द्रविड़ों के जुड़ाव के संदर्भ में इतिहासकारों का क्या मत है?
6. कौन-सी भाषिक विशेषताएँ संस्कृत और द्रविड़ भाषाओं को जोड़ती हैं?
7. द्रविड़ भाषा-परिवार के क्षेत्र विस्तार के विषय में बताइए।

8. परिवार के रूप में द्रविड़ भाषाओं को सबसे पहले किस विद्वान ने चिह्नित किया और किस तर्क के साथ चिह्नित किया?

9. राबर्ट कॉडवेल ने द्रविड़ भाषा-परिवार में कितनी भाषाओं को शामिल किया, उनके नाम बताइए।

10. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कौन सी भाषाएँ द्रविड़ भाषा-परिवार में शामिल हो गईं।

11. द्रविड़ भाषा-परिवार की भाषाओं को मूलतः कितने वर्गों में विभाजित किया जा सकता है? प्रत्येक वर्ग में आने वाली भाषाओं के नाम बताइए।

12. द्रविड़ भाषा-परिवार की प्रमुख भाषिक विशेषताएँ बताइए।

2.10 शब्द सूची

- **भाषा-परिवार** - ऐसी भाषाएँ जिनका मूल स्रोत एक है, भोगौलिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ ध्वनि, रूप, अर्थ और वाक्य-संरचना में समानता हो, एक भाषा-परिवार का निर्माण करती है।
- **प्राकृत भाषा** - प्राचीन प्रचलित जनभाषा।
- **भाषिक समुदाय** - व्यक्तियों का ऐसा समूह जो भाषा के प्रयोग को लेकर एक जैसे नियम, आचार-व्यवहार का प्रयोग करता हो।
- **अश्लिष्ट योगात्मक भाषा** - अश्लिष्ट का अर्थ है न चिपका हुआ। अर्थात् जिस भाषा में अर्थ तत्व और सम्बन्ध तत्व इस प्रकार संयुक्त हो कि उनका रूप स्पष्ट रूप से पहचाना जा सके।
- **ह्रस्व (लघु) / दीर्घ स्वर** - स्वरों के उच्चारण में कुछ समय लगता है। इस प्रकार समय (काल) की मात्रा के आधर पर स्वर के ह्रस्व और दीर्घ दो भेद होते हैं। ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है जैसे अ, इ, उ। दीर्घ स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है जैसे आ, ई, ऊ।
- **स्वनिमिक केन्द्रीय स्वर** - स्वरों का एक वर्ग जिसका उच्चारण जीभ के अग्र और पश्च के मध्य से होता है। इन स्वरों में अर्थ परिवर्तन की क्षमता भी होती है।
- **वृत्तमुखी स्वर** - ओष्ठों की स्थिति के आधार पर स्वरों का स्वरूप निर्धारित होता है। जिन स्वरों के उच्चारण में ओष्ठों की स्थिति वृत्ताकार होती हैं उन्हें वृत्तमुखी कहते हैं।
- **बलाघात** - जो वाक्य हम बोलते हैं उसके सभी खण्डों पर हम बराबर बल नहीं देते। बोलते समय हम जिन स्वरों, शब्दों पर बल देते हैं, वहाँ का उच्चारण सघन हो जाता है, जिसे बलाघात कहते हैं। लिखित और उच्चरित भाषा में बलाघात मुख्य अंतर है।
- **स्वर** - स्वर वे ध्वनियाँ होती हैं जो मुख में बिना किसी बाधा के उच्चरित होती हैं।
- **व्यंजन** - वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में फेफड़ों से आने वाली वायु मुख और स्वरतंत्री में किसी न किसी बाधा से होकर गुजरती है।
- **मूर्धन्य ध्वनि** - इन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मुड़कर मूर्धा (Cerebrum) को छूती है। इस क्रिया को प्रतिवेष्टन (Retroflection) भी कहते हैं। ण, ड़, न आदि ऐसी ही ध्वनियाँ है।
- **महाप्राण ध्वनि** - स्पर्श व्यंजनों के उच्चारण में वायु का प्रवाह कम या अधिक हो सकता है। यह प्रवाह जब कम होता है तो अल्पप्राण और अधिक होता है तो महाप्राण कहते हैं।
- **सघोष** - जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्री का मार्ग संकरा हो जाता है जिसके कारण उसमें कम्पन होता है।
- **विभक्ति** - कारक को सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्ति कहते हैं।

- **पद** - सार्थक ध्वनि-समूह को 'शब्द' कहते हैं। ये शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो पद कहलाते हैं।
- **स्वरांत शब्द** - ऐसे शब्द जिनका अंत स्वर से हो।
- **विवृत्त** - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवर बहुत खुला होता है, अर्थात् जिह्वा और स्वर-सीमा के मध्य अधिक से अधिक स्थान खाली रहता है जैसे आ।
- **कृदन्त** - कृदन्त का अर्थ है - कृत् + अन्त। धातु के अंत में जोड़े जाने वाले प्रत्यय कृत प्रत्यय कहलाते हैं और इस प्रकार बना रूप कृदन्त।
- **प्रत्यय** - ध्वनि या ध्वनि समूह की वह इकाई जो व्याकरणिक रूप की दृष्टि से अथवा अर्थ में परिवर्तन लाने के लिए मूल शब्द में जोड़ी जाती है किन्तु उसका स्वतंत्र उपयोग नहीं किया जा सकता।
- **वाच्य** - वाच्य क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया में कर्त्ता, कर्म या भाव की प्रधानता के विधान का ज्ञान होता है।
- **कर्मवाच्य** - कर्मवाच्य में भूतकाल की क्रिया का बोध होता है।
- **भाववाच्य** - जब भाव पर जोर हो तो भाववाच्य होता है।
- **संयोजक तत्व** - दो शब्दों, पदबन्धों या वाक्यांशों को मिलाने अथवा उनका संयोजन करने वाले तत्वों को भाषा में संयोजक तत्व कहते हैं।
- **पूर्वकालिक** - क्रिया के पूर्व होने वाली क्रिया सूचक शब्दों को पूर्वकालिक कहते हैं।
- **संयुक्त क्रियाएँ** - जिन क्रियाओं में संयुक्त धातुएँ हों।
- **स्वर बलाघात** - जहाँ शब्दों में व्यंजन से अधिक स्वर पर बलाघात हो।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- तिवारी, भोलानाथ, 1973, *हिन्दी भाषा,* इलाहाबाद, किताब महल।
- चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार, *भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी* ।
- Caldwell, Robert, *A Comparative Grammar of the Dravidian or South Indian Family of Languages,* Delhi, Asian Educational Services
- Steever, Sanford B.(ed.), 1998. *The Dravidian Languages,* London and Newyork, Routledge
- Ramaiah, L.S., 1994 *General and Comparative Dravidian Languages and Linguistics, Vol -1,* Madras,T.R. Publications.

इकाई 3 ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार का वर्गीकरण

3.3 मुण्डा भाषाएँ

3.3.1 मुण्डा भाषाओं की संरचनागत विशेषताएँ

3.4 मॉनख्मेर भाषा-परिवार

3.4.1 मॉनख्मेर भाषाओं की भाषिक विशेषताएँ

3.5 खासी

3.5.1 भाषिक विशेषताएँ

3.6 अन्य सम्बन्धित विचारणीय बिन्दु

3.7 सारांश

3.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे :

- ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषाओं का वर्गीकरण;
- ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार का भौगोलिक विस्तार;
- मुण्डा और मॉनख्मेर भाषाएँ;
- इस भाषा परिवार की भाषायी विशेषताओं, जैसे ध्वनि, शब्द संरचना, पद-रूप एवं वाक्य विन्यास इत्यादि विशेषताओं का अध्ययन; और
- अन्य भाषाओं के सम्पर्क से इन भाषाओं में आये परिवर्तन।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम भारत के तीसरे प्रमुख भाषा परिवार - ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय पर परिचर्चा करेंगे। अब तक आप भारत के दो भाषा परिवारों - भारतीय-आर्य और द्रविड़ भाषा परिवार से परिचित हो चुके होंगे। यह माना जाता है कि दक्षिण पूर्व एशियाई भाषाएँ द्रविड़ और भारतीय आर्य भाषाओं से भी पुरानी हैं। ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषाएँ ऑस्ट्रिक भाषा परिवार का एक उपसमूह हैं और मॉनख्मेर, मुण्डा तथा कुछ अन्य भाषा समूह इसके अन्तर्गत आते हैं। ये भाषाएँ मुख्यतः दक्षिण पूर्व एशिया में बोली जाती हैं।

ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार को सामान्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है : मॉनख्मेर, मुण्डा एवं निकोबारी भाषाएँ। लेकिन यह वर्गीकरण सर्वमान्य नहीं है। एशर (2008) निकोबारी भाषाओं को एक अलग भाषा समूह न मानकर इसे मॉनख्मेर के अन्तर्गत रखते हैं। एशर लिखते हैं, 'मॉनख्मेर के बारह ज्ञात भागों में से दो भारत में पाए जाते हैं : खासी और निकोबारी' (2008, पृ. 41)। एशर ने ऑस्ट्रो-एशियाटिक को दो मुख्य भागों में बाँटा है - मॉनख्मेर एवं मुण्डा। उनके अनुसार मॉनख्मेर के उपभाग मुण्डा भाषाओं की अपेक्षा अधिक जटिल हैं। ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार के वर्गीकरण पर अभी अनुसंधान की आवश्यकता है। सर्वमान्य

वर्गीकरण न हो पाने का मुख्य कारण विद्वान सही आँकड़ों का अभाव मानते हैं। भारत में इस भाषा परिवार की बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या 25 है तथा इन्हें बोलने वालों की संख्या 1 करोड़ 20 लाख है (सिंह एवं मनोहरन 1993)।

3.2 ऑस्ट्रिक अथवा आग्नेय भाषा परिवार का वर्गीकरण

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शिमेट से लेकर डिफ्लॉथ के नवीनतम वर्गीकरण तक दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषा परिवार का वर्गीकरण बार-बार परिवर्तित किया गया है। वर्तमान में अनेक साहित्यिक एवं भाषा वैज्ञानिक प्रकाशनों के फलस्वरूप इस भाषा परिवार के विषय में हमारी जानकारी में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। यहाँ हम शिमेट से आरम्भ करते हुए डिफ्लॉथ तक कुछ वर्गीकरणों पर चर्चा करेंगे।

विलहेम शिमेट एक मानवशास्त्री थे। उन्होंने 1904 से 1907 के मध्य अपने लेखों की श्रृंखला में ऑस्ट्रिक भाषा परिवार की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसके अन्तर्गत उन्होने ऑस्ट्रोनेशियाई (Austronesian or Malaypolynesian) एवं ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषाओं को शामिल किया। ऑस्ट्रोनेशियन समूह के अन्तर्गत मेडागास्कर, इन्डोनेशिया तथा प्राान्त महासागर के द्वीप समूह की भाषाएँ आती हैं और ऑस्ट्रोएशियाटिक समूह में भारत एवं इसके सुदूर क्षेत्रों की भाषाएँ आती हैं; (Languages scattered over nearer and farther India'. *LSI*, Vol. 1, p. 32)। भारत में ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषाएँ प्रमुख रूप से बोली जाती हैं।

यद्यपि इस भाषा परिवार का विचार सर्वप्रथम लोगान (1856) ने रखा था और फोर्ब्स (1881), म्यूलर (1888) तथा कुन (1889) ने इसे विस्तार दिया लेकिन शिमेट (1906) ने एक मजबूत आधार देकर इस विशाल भाषा परिवार के अस्तित्व को सिद्ध किया। शिमेट के वर्गीकरण को समग्र रूप से इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

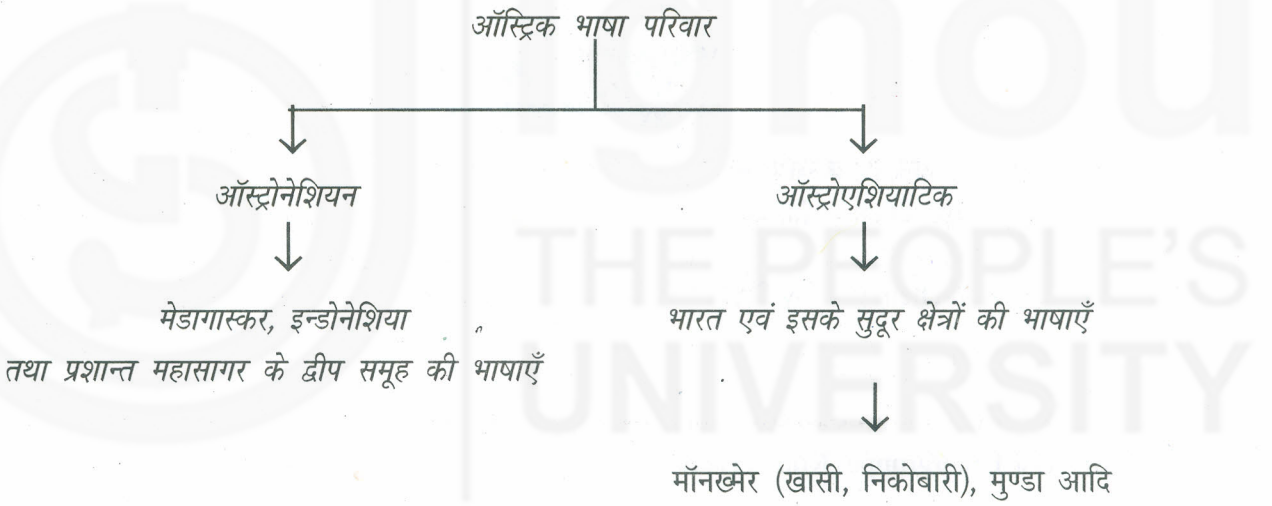

मॉनख्मेर, मुण्डा, खासी तथा कुछ अन्य भाषाओं को ऑस्ट्रोएशियाटिक समूह में रखा गया है तथा ऑस्ट्रोनेशियन समूह में इन्डोनेशिया, मलयनेशिया तथा पोलीनेशिया की भाषाओं को रखा गया है। इन्डोनेशिया की भाषाओं को ऑस्ट्रोएशियाटिक और ऑस्ट्रोनेशियन भाषाओं के मध्य की कड़ी माना जाता है। इस प्रकार ऑस्ट्रिक भाषा परिवार दो भाषा समूहों में और इन दो भाषा समूहों को अनेक उपसमूहों में विभाजित किया जाता है और 'इस तरह एक विशाल ऑस्ट्रिक परिवार हमारे सामने आया जो मध्य भारत की पहाड़ियों से लेकर पूर्वी द्वीपों तक, दक्षिणी अमेरिका के तटीय क्षेत्रों तक फैला हुआ भारतीय यूरोपीय भाषाओं से भी विस्तृत क्षेत्र में व्याप्त है'। (*LSI*, Vol. I: 15)

शिमेट द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण की उनके द्वारा प्रयुक्त विधि के कारण आलोचना की गई। (शिमेट के आरम्भिक विभाजन के लिए डेविड थॉमस के लेख का अध्ययन करें)। 1926 में शिमेट द्वारा प्रस्तुत संशोधित वर्गीकरण इस प्रकार है :

1. प्राचीन मलय (सेमांग, सेनोइ)
2. मध्य (खासी, निकोबारी, पालाउनगिक)

3. दक्षिणपूर्व व उत्तरपश्चिम (मॉनख्मेर, मुण्डा)

4. उत्तरपूर्व मिश्रित (चाम, सेदांग आदि)

ग्रियर्सन ने मुण्डा और मॉनख्मेर का वर्णन अलग-अलग भाषा परिवार के रूप में किया है। इन भाषाओं के एक ही आधार को स्वीकार करते हुए ग्रियर्सन लिखते हैं, 'मुण्डा और मॉनख्मेर शब्दों में इतनी अधिक समानता है कि इन भाषाओं के बीच सम्बन्ध पर कोई सन्देह नहीं किया जा सकता' (वर्मा 1972: 109)। ग्रियर्सन ने इन दोनों भाषा समूहों में निम्न दो मुख्य अन्तर बताए हैं:

- **अक्षर संरचना** मुण्डा भाषाएँ अनेकाक्षरी (polysyllabic) और मॉनख्मेर भाषाएँ एकाक्षरी (monosyllabic) हैं।
- **शब्द क्रम** मुण्डा - कर्ता, कर्म, क्रिया।

  मॉन व खासी - कर्ता, क्रिया, कर्म

ग्रियर्सन के मतानुसार निकोबारी भाषाएँ मुण्डा और मॉन को जोड़ने वाली एक कड़ी की तरह हैं। मॉनख्मेर भाषाओं में निकोबार भाषी ही एकमात्र ऐसा समुदाय हैं जो मुख्य क्षेत्र से पृथक रहते हैं। अभी तक छः निकोबारी भाषाएँ ज्ञात हैं: कार (Car), कोवरा (Chowra), टेरेसा (Teressa), नॉनकोवरी (Noncowry), दक्षिणी निकोबारी (South Nicobarese) तथा शैम्पेइ (Shamp?)। निकोबार भाषाओं की मुख्य विशेषता इनकी समृद्ध एवं उत्पादक पद संरचना है।

एच जे पिनो (1959) ने ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। पिनो का कार्य उल्लेखनीय है और इस दिशा में हुई प्रगति का द्योतक है। पिनो (1959) का वर्गीकरण इस प्रकार है:

- पश्चिम-उत्तर पश्चिम – नहाली
- उत्तर पश्चिम – मुण्डा
- मॉनख्मेर – a) मॉन, b) कम्बोज भाषाएँ (Kambodja-Sprachen) Khmer, Pear, Stieng and others, c) Chəma-Sprachen (Ma, Chrau and others), d) Mnong-Sprachen, e) Bahnar-Sprachen, f) Sedang-Sprachen, g) Brao-Sprachen, h) J ru-Sprachen (Boloven, Nhaheun and others), i) Kuoy-Sprachen, j) Suoy-Sprachen (Kaseng, Alak, Laveh and others)
- Nordost – Palaung-Wa-
  a) West-Untergruppe (Riang, Palaung, Wa and others)
  b) Ost-Untergruppe (Khmu, Lamet and others)
- Nord Khasi
- Südwest Nikobar
- Sömang-Pangan (Malaya)
- Sakai (Malaya)
- Jaku'd (Malaya)

इस वर्गीकरण की मुख्य विशेषता यह थी कि इसमें पिनो ने मॉनख्मेर के अन्तर्गत दस भाषा समूहों को रखा जिन्हें आज मॉनिक (Monic), ख्मेरिक (Khmeric), पियरिक (Pearic), बाहनरिक (Bahnaric) एवं काटुइक (Katuic) के रूप में जाना जाता है। ये सभी भाषाएँ एक-दूसरे से भौगोलिक समीपता रखती हैं तथा प्राचीन समय से ही इन पर भारतीय प्रभाव देखा जा सकता है।

गैरार्ड डिफ्लॉथ (1974) ने ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार को मुण्डा और मॉनख्मेर दो भागों में विभाजित किया है और इन दो वर्गों में पुनः कई भाषा समूह आते हैं:

- मुण्डा – उत्तरी मुण्डा, कोरकू, खरवार ।

  दक्षिणी मुण्डा – खरिया-जुआंग, कोरापुट मुण्डा।

- मॉनख्मेरः

  पूर्वी मॉनख्मेर – ख्मेर (कम्बोडियाई), पियरिक, बाहनारिक, काटुइक, वीटिक (जिसमें वियतनामी भी शामिल है);

  उत्तरी मॉनख्मेर – खासी

  दक्षिणी मॉनख्मेर – मॉन, आसलियन (मलय), निकोबारी।

लेकिन अपने नवीनतम वर्गीकरण में डिफ्लॉथ (2005) ने ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषाओं के दो के स्थान पर तीन उपसमूह बताए हैं :

- मुण्डा – रेमो, सवारा, खरिया-जुआंग, कोरकू, खरवारी
- खासी-ख्मुइक (Khmuic) खासी – पूर्वी भारत और बांग्लादेश की 3 भाषाएँ

Table 3.1: Diffloth's Classifation of Austro-Asiatic Language Family 2005

Munda

Remo, Savara, Kharian-Juang, Korku, Kharewarian

Khasi- Khmuic (Northern Mon-Khmer)

Khasian: 3 languages of eastern India and Bangladesh Palaungo-Khmuic languages, Khmuic : 13 languages of Laos and Thailand, Palaungo-Pakanic languages, Pakanic or Palyu : 4 or 5 languages of southern China and Vietnam, Palaungic: 21 languages of Burma, southern China, and Thailand

Nuclear Mon-Khmer languages

Khmero-Vietic languages (Eastern Mon-Khmer) Vieto-Katuic languages, Veitic: 10 languages of Vietnam and Laos, including the Vietnamese language, which has the most speakers of any Austro-Asiatic language. These are the only Austro-Asiatic languages to have highly developed tone systems, Katuic: 19 languages of Laos, Vietnam, and Thailand. Khmero-Bahnaric languages, Bahnaric: 40 languages of Vietnam, Laos, and Cambodia, Khmeric languages

The Khmer dialects of Cambodia, Thailand, and Vietnam, Pearic: 6 languages of Cambodia, Nico-Monic languages (Southern Mon-Khmer), Nicobarese: 6 languages of the Nicobar Island, Asli-Monic languages, Aslian: 19 languages of peninsular Malaysia and Thailand., Monic: 2 languages, the Mon language of Burma and the Nyahkur language of Thailand

इसके अलावा इलिया पेयरोस (1998) का वर्गीकरण इन भाषाओं की शब्दावली की समानता पर आधारित है।

ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषाओं के वर्गीकरण की मुख्य कठिनाई यह है कि ये भाषाएँ भौगोलिक रूप से अत्यधिक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती हैं। विभिन्न वर्गीकरणों की मुख्य विशेषता विद्वानों की मत भिन्नता न होकर उनके द्वारा प्रयुक्त भिन्न-भिन्न विधियाँ हैं। पुनश्च, ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार का वर्गीकरण सामान्यतः इस प्रकार किया जाता है :

ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवाार

↓

भारत में तथा भारत के समीप

एवं सुदूर क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाएँ

↓

मॉनख्मेर (खासी, निकोबारी)

मुण्डा

3.3 मुण्डा भाषाएँ

'प्रोफेसर मैक्समूलर ने 1854 में मुण्डा भाषाओं को द्रविड़ भाषाओं से अलग एक स्वतंत्र भाषा समूह के रूप में पहचाना' (*LSI*, Vol.1, p. 35)। मैक्समूलर ने इस भाषा समूह को मुण्डा नाम दिया। मुण्डा भाषाएँ ऑस्ट्रो एशियाटिक भाषा समूह का एक उपसमूह हैं। छोटा नागपुर पठार को, जिसमें बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड और उड़ीसा आते हैं, मुण्डा भाषाओं के मुख्य क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। मुण्डा भाषाओं का विस्तार अधिकतर उत्तर पूर्व, मध्य तथा पूर्वी भारत, नेपाल एवं बांग्लादेश तक है। मुण्डा के अन्तर्गत आने वाली कुछ भाषाएँ इस प्रकार हैं (ग्रियर्सन) :

खरवारी

खरवारी अर्थात् खरवारों द्वारा बोली जाने वाली भाषा। यह शब्द व्यापक रूप में मध्य भारत के उत्तर पूर्वी छोर तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाने वाली बोलियों को इंगित करता है। सन्थाली, मुन्दारी, हो, भुमिज और कोरवा कुछ प्रमुख बोलियाँ हैं। सन्थाली ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार की एकमात्र भाषा है जिसे भारत के संविधान में आठवीं अनुसूची की भाषाओं में रखा गया है। मुण्डा भाषाओं में सन्थाली बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में सन्थाली बोलने वालों की संख्या 64,69,600 है। भारत में सन्थाली बोलने वाले सबसे अधिक बिहार, झारखंड, और पश्चिम बंगाल में हैं। असम, त्रिपुरा और ओड़ीशा में भी इसके बोलने वाले हैं। सन्थाली की दो बोलियाँ हैं - करमाली (या काल्हा) और माहले। ग्रियर्सन का मानना है कि ये दो बोलियाँ सन्थाली के मानक प्रारूप से ज्यादा भिन्न नहीं हैं। मुन्दारी बोलने वालों की संख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 10,61,352 है। यह भाषा मुख्यतः झारखंड और ओड़ीशा में बोली जाती है, साथ ही इसे असम, बिहार, पश्चिम बंगाल में भी बोला जाता है। हो, भुमिज कोरवा, तुरी और असुरी कुछ बोलियाँ हैं जिनका उल्लेख ग्रियर्सन के यहां मिलता है।

कोरकू (5,74,481)

यह इस समूह की पश्चिमी भारत में बोली जाने वाली एकमात्र भाषा है। यह महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश की कोरकू जनजाति द्वारा बोली जाती है। इसकी दो बोलियाँ हैं - मुवासी एवं नहाली। नहाली CIIL (Central Institute of Indian Languages) की भाषा सूची में कोरकू की बोलियों में शामिल नहीं है। ग्रियर्सन ने इस बोली को लुप्त होने के कगार पर बताया है। ग्रियर्सन लिखते हैं, 'यह द्रविड़ भाषाओं से प्रभावित होकर एक मिश्रित भाषा का रूप ले चुकी है आधी मुण्डा और आधी द्रविड़। और यह मिश्रित भाषा पुनः आर्य भाषाओं से प्रभावित होती हुई अब आर्य भाषा बनने की ओर अग्रसर है।' (*LSI*, Vol. 1, p. 29)

खरिया

2001 की जनगणना के अनुसार खरिया बोलने वालों की संख्या 2,39,608 है। यह मुख्यतः झारखंड में बोली जाती है। साथ ही यह भाषा बिहार, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम, ओड़ीशा और नेपाल में भी कुछ स्थानों पर बोली जाती है।

जुआंग

जुआंग ओड़ीशा के धनकनल तथा कोयनझार जिलों में मुण्डा जनजाति द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। इस भाषा पर ओड़िया का प्रभाव देखा जा सकता है।

सवारा (या सोरा)

यह खरिया, जुआंग तथा गुटोब की तरह दक्षिण मुण्डा समूह की एक भाषा है। यह मुख्यतः ओड़ीशा के गंजम, कोरापुट और फूलबनी जिलों में तथा साथ ही ओड़ीशा राज्य की सीमा से लगे राज्यों तथा असम में भी बोली जाती है। 'सवारा तेलुगु से प्रभावित होती हुई अब अमिश्र भाषा नहीं रह गई है। यह खरिया तथा जुआंग से बहुत मिलती-जुलती है लेकिन कुछ बातों में उनसे अलग है और खरिया की बोलियों जैसी लगती है।

गदाबा

यह मुख्यतः ओड़ीशा के कोरापुट जिले की भाषा है, लेकिन यह आंध्र प्रदेश के कुछ भागों में भी बोली जाती है।

मुण्डा भाषाओं के वर्गीकरण के लिए निम्न लेखों का अध्ययन किया जा सकता है :

- Bhattacharya, S. (1975). *A new classification of Munda. Indo-Iranian Journal* 17: 97-101
- Anderson, Gregory D S (2001). *A New Classification of South Munda: Evidence from Comparative Verb Morphology*. Indian Linguistics. 62. Poona: Linguistic Society of India.pp.21-36. http://livingtongues.org/docs/**Munda_Classification**.pdf

3.3.1 मुण्डा भाषाओं की संरचनागत विशेषताएँ

इस खण्ड में हम मुण्डा भाषाओं की कुछ संरचनागत विशेषताओं का उल्लेख करेंगे। इन भाषाओं में अन्य भाषाओं, विशेषकर भारतीय आर्य भाषाओं से सम्पर्क के कारण अनेक परिवर्तन देखे जा सकते हैं। ये भाषाएँ अन्य भाषाओं की अनेक विशेषताओं को आत्मसात् कर चुकी हैं। इस खण्ड में हम मुण्डा विशेषताओं का ही उल्लेख करेंगे।

ध्वनि व्यवस्था

मुण्डा भाषाएँ स्वर की दृष्टि से समृद्ध हैं। सभी स्वर छोटे तथा बड़े दोनो रूपों में पाए जाते हैं। इस परिवार की सभी भाषाओं में स्वर संगति (Vowel Harmony) पाई जाती है। स्वर संगति का तात्पर्य है क्रिया में स्वर के मध्य योग द्वारा संज्ञा का निर्माण किया जाता है। मध्ययोग का स्वर हमेशा मुख्य धातु के स्वर की प्रतिलिपि होता है। जैसे खरिया में *jib* (जिब) का अर्थ है 'स्पर्श करना' (क्रिया), इसमें न+स्वर के मध्य योग से *jinib* (जिनिब) शब्द बनता है जिसका अर्थ है स्पर्श (संज्ञा)।

व्यंजनों की दृष्टि से भी ये भाषाएँ समृद्ध हैं। ग्रियर्सन ने इन भाषाओं में कठोर तथा कोमल व्यंजनों का उल्लेख किया है। और दोनों ही प्रकार के व्यंजन महाप्राण हो सकते हैं। अर्द्धव्यंजन मुण्डा भाषाओं की मुख्य विशेषता है। स्वरयंत्रमुखी स्पर्श (glottal stop) / ʔ / की स्वनिम के रूप में उपस्थिति इन भाषाओं की अन्य प्रमुख विशेषता है। जैसे

सन्थाली	/u:p/	बाल
	/ʔu:p/	रखना
खरिया	/borol-daʔ/	जल (पानी)
	/laʔ-ta/	लगता है (feels)

(अब्बी 2001 : 24)

शब्द एवं रूप व्यवस्था

मुण्डा भाषाओं की तुर्की व्याकरण से तुलना करते हुए ग्रियर्सन लिखते हैं, 'उपसर्ग के बाद उपसर्ग जोड़कर जो शब्द अन्ततः बनता है वह यूरोप के किसी भी व्यक्ति को लम्बाई के कारण भयानक प्रतीत हो सकता है, लेकिन यह अपने आप में पूर्ण होता है' (*LSI*, Vol I: 36) ।

ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषाएँ पद संरचना की दृष्टि से अत्यधिक योगात्मक (*agglutinating*) हैं। मुख्य धातु से शब्द द्वित्व (reduplication) अथवा प्रत्ययों को जोड़कर बनाए जाते हैं। धातु में मध्ययोग (*infixes*) द्वारा नये शब्द बनाना प्रचलित है, जैसे सन्थाली - डाल (मारना); डापाल (मार-पीट - मारना पारस्परिक हो जाता है); मुन्दारी-मारान-महान, मानारान-महानता। खरिया से लिए गए निम्न उदाहरण देखें इनमें क्रिया धातु में मध्ययोग द्वारा संज्ञा निर्माण किया गया है :

सारणी : खरिया में क्रिया से संज्ञा निर्माण

क्रिया	अर्थ	संज्ञा
Jib	स्पर्श करना	*jinib*
job	चूसना	*jo-no-b*
jun	पूछना	*ju-nu-ɳ*
kol	गिनना	*ko-no-l*
ɖeb	चढ़ना	*de-ne-b*
ɖel	आना	*de-ne-l*
joʔ	झाड़ना	*jo-no-ʔ*

(मल्होत्रा 1982, अब्बी 2001:157 से उद्धृत)

इन भाषाओं में संज्ञा, क्रिया आदि में अलग-अलग शब्द वर्ग का कोई विभेद नहीं है। निर्देश्य, विशेषण, संख्या, मात्र आदि सूचना क्रिया के साथ संलग्न होती हैं।

संथाली - */ɛge:r-ked-iɲ-a/*

scold-pst-object marker-[me]-definite

अ ने मुझे डांटा।

(अब्बी 2001:34)

संज्ञा में लिंग भेद नहीं होता है। संज्ञा में सजीव-निर्जीव का भेद पाया जाता है। लेकिन सजीव और निर्जीव के निर्धारण की कसौटी अलग-अलग समुदायों में अलग-अलग होने के कारण स्थिति और भी जटिल हो जाती है। जैसा कि अब्बी (2001:119) ने लिखा है, 'मुण्डा भाषाओं में बौद्धिक प्राणी, पशु, अलौकिक शक्तियां, और देवता सजीव हैं। प्रत्येक संज्ञा के लिए लिंग निर्धारणं की कसौटी एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय में भिन्न हो जाती है, क्योंकि यह प्रत्येक भाषा समूह की विचारधारा पर निर्भर करता है।'

इन भाषाओं में तीन वचन हैं- एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन। उदाहरण के लिए खरिया क्रिया 'ढोको' (बैठना) में वचन इस प्रकार होगाः

सारणीः विभिन्न वचनों में खरिया क्रिया 'ढोको' (बैठना)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष *exclusive*	ɖoko-taɳ	ɖoko-ta-jar	ɖoko-ta-le
प्रथम पुरुष *inclusive*		ɖoko-ta-naɳ	ɖoko-ta-niɳ
द्वितीय पुरुष	ɖoko-ta-m	ɖoko-ta-bar	ɖoko-ta-pe
तृतीय पुरुष	ɖoko-ta-Φ	ɖoko-ta-kiyar	ɖoko-ta-kièmoy

(मल्होत्रा 1982, अब्बी 2001:35 से उद्धृत)

ये भाषाएँ व्यक्तिगत सर्वनाम की दृष्टि से भी समृद्ध हैं। ये सर्वनाम वचन, वक्ता तथा वादी के मध्य दूरी तथा व्यक्ति-सम्बोधक तत्व (person-addresser component) को अलग से दिखाते हैं।

इन भाषाओं की कुछ अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

1. पद एवं वाक्य में विभेद का अभाव।
2. संश्लिष्ट क्रिया पद में ही कर्ता, प्रधान कर्म तथा गौण कर्म के बारे में समस्त सूचना निहित होती है। संश्लिष्ट क्रिया पद में विभिन्न पदों का क्रम इस प्रकार होता है- कर्ता सूचक पद + क्रिया + काल + कर्म सूचक पद + निश्चयात्मक बोधक पद। (संश्लिष्ट क्रिया पद का क्रम कर्ता-क्रिया-कर्म होता है।)
3. अन्य भाषाओं से सम्पर्क के फलस्वरूप इन भाषाओं में भी संज्ञा पद + क्रिया (NP+VP) पद देखने को मिलते हैं।

वाक्य विन्यास

संश्लिष्ट क्रिया पद के कारण इन भाषाओं में वाक्य, जैसा हम सामान्यतः परिभाषित करते हैं, उससे बिल्कुल भिन्न होते हैं। इन भाषाओं में पद एवं वाक्य-विन्यास को पूरी तरह अलग-अलग खांचों में समझना सम्भव नहीं है। 'मुण्डा भाषाओं के वाक्यों की संरचना आर्य भाषाओं से बिल्कुल भिन्न है, और इसलिए इसे सामान्यतः ज्ञात पद विभागों (parts of speech) में बांटना असम्भव ही है।' (LSI, vol. I : 37) मुण्डा व्याकरण की एक विशेषता का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है- श्रेणीपद 'आ' का प्रयोग (categorical a)। सन्थाली व्यक्ति किसी घटना (जैसे राम आया) की वास्तविकता को अभिव्यक्त करने के लिए श्रेणीपद 'आ' उपसर्ग का प्रयोग करते हैं।

मुण्डा भाषा में सम्पर्क के कारण आए परिवर्तनों के बारे में हम इस इकाई के अन्त में चर्चा करेंगे। जैसा कि हम सब जानते हैं भाषाएँ किसी स्थिर वस्तु की तरह नहीं हैं। भाषाएँ जीवन्त प्राणियों की तरह व्यवहार करती हैं। वे बढ़ती हैं, विकसित होती हैं, और अन्य कई कारकों से प्रभावित होती हैं। यह तथ्य है कि इस इकाई में हमने जिन भाषाओं का उल्लेख किया है वे नीतियों, तकनीकी कारणों, तथा विकास के अभाव के कारण (विकास के अभाव के कई कारण हो सकते हैं।) हाशिए पर हैं। और यदि विकास होता भी है तो इन भाषाओं की हानि ही अधिक होती है, क्योंकि ये भाषाएँ स्कूलों, कार्यस्थलों तथा साहित्य में उपयोग की जाने वाली मुख्य भाषाएँ नहीं हैं। यदि अन्य भाषाओं के कार्यों को इन भाषाओं में अनुवादित किया जाता है, तो ये भाषाएँ अनुवाद से किस प्रकार लाभान्वित हो सकती हैं, इस पर विचार करें।

3.4 मॉनख्मेर भाषा-परिवार

'मॉनख्मेर दक्षिण पूर्व एशिया का सबसे पुराना और विविधता पूर्ण भाषा-परिवार है। मॉनख्मेर लोगों ने पर्वतों से शीतोष्णीय प्रायद्वीप (tropical islands) तक दूर-दूर तक फैले इस क्षेत्र की समस्त प्राकृतिक सम्पदा का दोहन किया। इनमें से कुछ समुदाय तो लगभग पाषाण युग जैसी परिस्थितयों में ही रहे, जबकि कुछ ने महान सभ्यताओं

का निर्माण किया, जिन्हें आज भी मानवता की उपलब्धियों में से एक माना जाता है। अन्य एशियाई सभ्यताओं से सम्पर्क के जटिल इतिहास से समृद्ध मॉनख्मेर भाषाएँ उस क्षेत्र का अत्यन्त सजीव अभिलेख प्रस्तुत करती हैं जिसे तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण द्वारा जाना जा सकता है' (सिडवैल 2007: 1)।

मॉनख्मेर भाषाएँ इण्डोनेशिया, दक्षिण चीन, उत्तर पूर्व भारत तथा निकोबार द्वीप में बोली जाती हैं। इस भाषा का नाम दो प्रचीन साहित्यिक भाषाओं – ख्मेर और मॉन से लिया गया है। मॉनख्मेर भाषा के प्रारम्भिक तुलनात्मक अध्ययन के विषय में सिडवैल लिखते हैं – बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जर्मन तुलनात्मक भाषाविज्ञानी तथा मानवशास्त्री पीटर विलहेम शिमेट (1868-1954) ने तुलनात्मक मॉनख्मेर के अध्ययन क्षेत्र को अपने चार मुख्य प्रकाशनों की सीरीज से प्रभावी ढंग से स्थापित किया। और समग्र रूप से ये चारों लेख मॉनख्मेर भाषाओं का सुसंगत विवरण प्रस्तुत करते हैं। 'आज ये भाषाएँ सौ से भी अधिक भाषाओं के पैचवर्क के रूप में पूर्वी भारत से वियतनाम तक, yunnan से मलेशिया और अण्डमान के निकोबार द्वीप तक फैली हुई हैं। कुछ ही देशों में मॉनख्मेर को राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त है, जैसे कम्बोडिया और वियतनाम। अधिकतर स्थानों पर ये अल्पसंख्यक भाषाएँ हैं, जिनमें कुछेक सौ बोलने वाले समुदाय (कुछ aslian भाषाएँ) भी हैं और करोड़ों लोगों के समुदाय (खासी, काटुइक) भी हैं' (Sidwell http://people.anu.edu.au/~u9907217/languages/languages.html)।

क्योंकि वर्गीकरण पहले ही दिया जा चुका है, यहाँ हम इस परिवार की कुछ भाषाओं के केवल नाम ही दे रहे हैं :

दक्षिणपूर्वी–(कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैण्ड, लाओस, तथा दक्षिणी म्यांमार)

ख्मेर (म्यांमार की राजकीय भाषा), मॉन, पोर, चोंग, स्टींग, मनोंग, म्रे मा, च्राउ, बहनार, ब्राओ, च्रु, कुई, काटु, सॉइ, ब्रु और पाचोह (पाकोह)।

उत्तरपूर्वी–(लाओस, थाईलैण्ड, म्यांमार, दक्षिणी चीन)

पालाउंग, वा, कावा, लावा, रीन, बेनलुन, दानाओ, ख्मु और लामेत।

उत्तर पश्चिम–(भारत के उत्तर पूर्वी राज्य) – खासी।

दक्षिण पश्चिम–(निकोबार द्वीप) – निकोबारी और इसकी बोलियां।

3.4.1 मॉनख्मेर भाषाओं की भाषिक विशेषताएँ

विलियम शिमेट के प्रारम्भिक कार्य से अब तक इन भाषाओं के अध्ययन में अत्यन्त विकास हुआ है। 'बीसवीं शताब्दी में साठ व सत्तर के दशक के दौरान हुए कार्यों के फलस्वरूप, कम्प्यूटर युग से पहले और बाद में, जबकि तकनीकी विकास ने कार्यों को अपेक्षाकृत सुगम कर दिया है (यह उतना भी आसान नहीं है, सूचना-तकनीकी विकास ने काम में समय और जटिलता दोनों में कुछ कमी की है।) और शोर्टो की मॉनख्मेर तुलनात्मक शब्दकोश (2006) के प्रकाशन से व्यापक, विवरणात्मक और शाब्दिक आंकड़ों की सम्पदा हमें उपलब्ध है।' (सिडवैल 2007)

मॉनख्मेर भाषा परिवार में खासी पर हम विस्तृत चर्चा करेंगे। यहाँ हम संक्षेप में मॉनख्मेर की कुछ विशेषताओं को दे रहे हैं :

मॉनख्मेर में स्वनिमों की संख्या बहुत अधिक हो सकती है। और विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में इनका उच्चारण कुछ अलग प्रकार का होता है जैसे अंतःस्फुट (imploded) या/और कण्ठ्य (glottalised) व्यंजन, अघोष नासिक्य (voiceless nasal) और पार्श्विक ध्वनियाँ (lateral sounds), और इनमें तान (tones) या रजिस्टर हो सकते हैं जो श्वसित (breathy) और काकल रंजित (creaky) स्वरों में विभेद करते हैं। इन भाषाओं में विश्व की अन्य किसी भाषा की तुलना में अधिक स्वर हैं। कुछ भाषाओं में दर्जनों एकल स्वर (monophthong) तथा संयुक्त स्वर (dipthong) पाए जाते हैं।

मॉनख्मेर भाषा में शब्दों के आरम्भ में तीन या चार व्यंजनों का समूह हो सकता है, लेकिन शब्द के अन्त में आने वाले अक्षरों के समूह अपेक्षाकृत सीमित होते हैं। इस प्रकार की शब्द संरचना डेढ़ अक्षरी (sesqui syllabic) कहलाती है। एक मॉनख्मेर भाषा की संरचना का क्रम पश्चिमी बाहनारिक 'च्रु' के निम्न उदाहरणों से समझा जा सकता है।

CV *kaa* 'fish'
CVC *daak* 'water'
CCVC *plaj* 'fruit'
CCVC *pteh* 'earth'
CCCVC *kbreh* 'blink'

ये भाषाएँ व्याकरण की दृष्टि से विश्लेषणात्मक (analytical) हैं। शब्द निर्माण के लिए उपसर्ग तथा मध्ययोग का उपयोग सीमित ही होता है। इन भाषाओं में रूपात्मक सरलीकरण (morphological simplification) की प्रकृति पाई जाती है। इसका एक विशेष उदाहरण है – वियतनामी भाषा- इसके शब्द मूलतः एकाक्षरी हैं और इसमें व्याकरणिक सम्बन्धों को शब्द क्रम और संयुक्त पदों (समास) द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

वाक्य विन्यास की दृष्टि से मॉनख्मेर भाषाओं में दक्षिण एशिया भाषा क्षेत्र की विशेषताएँ पाई जाती हैं, जैसे-

कर्ता, क्रिया, कर्म, शब्द क्रम
संज्ञा विशेषण
क्रमिक क्रिया संरचनाएँ

सामान्यतः मॉनख्मेर भाषाओं में अपनी आस-पास की भाषाओं के वाक्य विन्यास संरचना को आत्मसात करने की प्रवृति देखी जाती है।

3.5 खासी

खासी मेघालय की राजकीय भाषा है, और यह मुख्यतः भारत के उत्तर पूर्व राज्यों में बोली जाती है। खासी या खासिक एक व्यापक शब्द है जिसका उपयोग मेघालय तथा पड़ोसी राज्यों एवं बांग्लादेश में बोली जाने वाली खासी की क्षेत्रीय बोलियों के लिए किया जाता है। मानक खासी या चेरापूंजी खासी भाषा वैज्ञानिक अध्ययनों में सबसे अधिक अभिलिखित और विश्वस्त स्त्रोत है। चेरापूंजी (खासी लोगों के लिए *सोहरां*) मानक खासी का स्थान है, यही वह जगह है जहाँ लन्दन मिशनरी सोसायटी और वैल कैल्विनिस्टिक मैथोदिस्ट मिशन ने अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य में अनेक स्कूलों की स्थापना की।

भारत में खासी बोलने वालों की संख्या (2001 की जनगणना के अनुसार) 1,128,575 है। निम्न सारणी में खासी भाषा के अन्तर्गत आने वाली भाषाओं को दर्शाया गया है-

सारणीः खासी भाषा के अन्तर्गत आने वाली भाषाएँ

खासी	**बोलने वालों की संख्या 1,128,575**
भोइ खासी	14,882
खासी	828,545
Pnar/Synteng	243,441
वर	25,886
अन्य	15,821

खासी अपने आस-पास (समीपवर्ती) गैर भारत आर्य भाषाओं से कुछ कारणों से एकदम अलग है जैसे- लिंग अभिव्यक्ति, व्याकरणिक सम्बन्धों की उपसर्ग द्वारा अभिव्यक्ति (द्रविड़, मुण्डा तथा तिब्बती-बर्मन भाषाओं में प्रत्यय), सम्बन्ध वाचक को वस्तु के बाद रखा जाना, और सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का प्रयोग।

3.5.1 भाषिक विशेषताएँ

ध्वनि तन्त्र

मानक खासी स्वरावली (सूची) मॉनख्मेर का आदर्श प्रतिरूप है जिसमें छोटे और बड़े दोनों स्वर आते हैं। 'खासी में ध्वनियां अपेक्षाकृत कम हैं और 23 वर्णों की वर्णमाला को इस भाषा के सामान्यतः उपयोग में आने वाले शब्दों की वर्तनी के लिए उपयुक्त समझा जाता है। ये वर्ण हैं - a b k d e g n g h i ï l m n ñ o p r s t u w y । खासी में पश्च घोष स्पर्श ध्वनि 'ग' / g / (velar voiced stop / g /) नहीं पाई जाती है। खासी में यह ध्वनि उन विदेशी शब्दों के शामिल होने से आयी जिनमें यह स्वनिम आता है, जैसे गधा। लेकिन न्यू टेस्टामेंट के पुराने अनुवादों में डंकी शब्द का उपयोग किया गया है। रोचक बात यह है कि एक विदेशी स्वन का (phone) शब्द के शुरुआत में इस्तेमाल होता था, लेकिन बाद का पद 'धा' का उच्चारण 'दा' मिलता है। यह सच है कि 'ध' खासी शब्दों में काफी कम ही मिलता है, लेकिन फिर भी इसका उपयोग होता है यद्यपि यह उपयोग केवल अन्य भाषाओं से आए शब्दों में ही दिखाई देता है। लेकिन 'गधा' शब्द में आरम्भिक स्वनिम 'ग' का स्थान अधिक सहज खासी स्वनिम 'क' / *k* / - (*कदा - गधा*) ने ले लिया है।' (साइमन 2008: 63)।

खासी में कुछ ध्वनियां सामान्यतः शब्दों के अन्त में नहीं आतीं, जैसे- ल, स, संघर्षी, संयुक्त सर्वनाम, घोष स्पर्शी तालव्य और पश्च नासिक्य ' ञ ' [ŋ] की आवृति विशेष रूप से देखी जाती है। खासी में शब्दारम्भ में 'ञ' [ŋ] के साथ अन्य व्यंजन संयुक्त रूप से अनेक व्यंजन गुच्छ बनाते हैं। अन्य ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषाओं की तरह स्वरयंत्र मुखी स्पर्श (glottal stop ʔ) स्वनिमिक है। 'फ' इस भाषा में नहीं पाया जाता है। लेकिन यह /p^h/ के साथ मुक्त वितरण में (समस्वन के रूप में उपयोग में) आता है जैसे *football* का उच्चारण *phutbɔ:l* होता है।

खासी में व्यंजन गुच्छ शब्दों के शुरुआत में आते हैं जैसे-ब्र-ब्रेत (*brɛt*)-फेंकना, त्व-त्वा (*twa*)-ढहना लेकिन शब्द के अन्त में इनका उपयोग नहीं होता है।

खासी की एक खास विशेषता है आरम्भ सरलीकरण। आरम्भ सरलीकरण एक शब्द के आरम्भिक अक्षर के व्यंजन या व्यंजनों को हटाने की प्रक्रिया है। खासी में आरम्भ सरलीकरण ऐसे संज्ञा धातु में देखने को मिलता है जो संयुक्त पद (compound) में पाया जाता है। आरम्भ सरलीकरण के लिए यह आवश्यक है कि धातु एकाक्षरी होनी चाहिए तथा इनमें शुरुआत में व्यंजन समूह होना चाहिए। यह आरम्भ सरलीकरण की न्यूनतम आवश्यकता है।

जैसेः

आधार पद		उच्चारित पद	अर्थ
b re:u + sta:d	→	re:usta:d	बुद्धिमान व्यक्ति
bre:u + spa:	→	re:uspa:ʔ	अमीर व्यक्ति

(www.lisindia.net)

शब्द एवं पद व्यवस्था

खासी एक विश्लेषणात्मक भाषा है। इसकी कुछ संरचनागत विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं :

1. सभी शब्द (संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि) अपरिवर्तनीय हैं।
2. विभक्ति का उपयोग नहीं होता है।
3. शब्दों में व्याकरणिक सम्बन्ध पद रूप से व्यक्त नहीं होते हैं।
4. वाक्य विन्यास तथा व्याकरणिक सम्बन्ध मुख्यतः शब्द क्रम द्वारा अभिव्यक्त होते हैं।
5. शब्द मुख्यतः एकाक्षरी होते हैं जो कि अधिकतर अयोगात्मक भाषाओं की विशेषता है।
6. खासी में शब्द वर्ग बनाए रखने वाले और शब्द वर्ग बदलने वाले उपसर्ग बहुत कम पाए जाते हैं।

7. विभक्तियों का उपयोग न होने के कारण निपात (स्वतन्त्र अव्यय) विशेषकर *'proclitics'* के विशेष व्याकरणिक प्रकार्य हैं। अव्यय व्याकरणिक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने वाले ऐसे अपरिवर्तनीय पद हैं जो पृथक संरचना एवं प्रकार्य की दृष्टि से भाषिक तत्वों का एक निकट (close) समूह बनाते हैं। ये पद शब्दों जैसे ही होते हैं, लेकिन इनका स्वतंत्र उपयोग नहीं होता। क्योंकि ये संरचना की दृष्टि से अन्य शब्दों पर निर्भर होते हैं, इसलिए इन्हें clitic कहा जाता है। कुछ खासी अव्ययों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

   निषेधात्मक अव्ययः यम/म (नहीं), khlem (नहीं-भूतकाल)

   Modal Verb particles देइ, हैप (must)

8. विशेषण धातु में बा उपसर्ग लगाकर बनाए जाते हैं, जैसे भा-अच्छाई, बा भा-अच्छा। विशेषण हमेशा संज्ञा से पहले आता है। क्रिया धातु सरल या संयुक्त भी हो सकती है। काल और उववक उपसर्गों द्वारा दिखाए जाते हैं।

9. शब्द क्रम सामान्यतः वाक्यों में शब्द क्रम कर्ता, क्रिया तथा कर्म होता है, लेकिन कभी-कभी प्रभाव उत्पन्न करने के लिए क्रिया को कर्ता से पहले रखा जाता है।

3.6 अन्य सम्बन्धित विचारणीय बिन्दु

भाषाओं के बारे में जानने के अन्तर्गत भाषाओं की संरचनागत विशेषताओं के साथ-साथ भाषाओं के सम्पर्क और समागम को समझना भी जरूरी है। भाषाएँ गतिशील और जीवन्त अस्तित्व रखती हैं। भाषाओं की संरचनागत विशेषताएँ अन्य भाषाओं से सम्पर्क के कारण परिवर्तित होती रहती हैं। परिवर्तन और आत्मसातीकरण की प्रक्रियाएं विभिन्न भाषाओं के लिए अलग-अलग होती हैं। परिवर्तन भाषा के सभी तत्वों में हो सकता है, कुछ तत्व, जैसे शब्द, अन्य तत्वों की अपेक्षा (जैसे ध्वनि) आसानी से बदलते हैं। ये परिवर्तन सकारात्मक हैं या नकारात्मक, यह विद्वानों के लिए विवाद का विषय हो सकता है। लेकिन यह सर्वज्ञात तथ्य है कि भाषाएँ बदलती हैं। सम्पर्क और समागम की ये प्रक्रियाएं अल्पसंख्यक भाषाओं के लिए (भारतीय सन्दर्भ में वे भाषाएँ जिन्हें भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है) और भी महत्वपूर्ण है, और उन भाषाओं के लिए जिन्हें एक सीमित क्षेत्र के बाहर शिक्षा के माध्यम की भाषा या व्यापारिक लेनदेन की भाषा का दर्जा हासिल नहीं है। अनेक मुण्डा और मॉनख्मेर भाषाएँ अल्पसंख्यक या जनजातीय समूहों की भाषाएँ हैं। इन भाषाओं को जीवित रखना ओर समृद्ध करना विद्वानों के समक्ष चुनौती भरा काम है। इस सन्दर्भ में खासी लिखित साहित्य एक अच्छा उदाहरण है जो पिछले डेढ़ सौ सालों के समय में ही विकसित हुआ है। यह उन लेखकों द्वारा सम्भव हुआ जिन्होंने अन्य भाषाओं का साहित्य खासी में अनुवादित किया। 'वर्ष 1896 खासी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इसी वर्ष खासी के अग्रणी लेखक यू जीबोन राय मैरोम, जिन्हें आधुनिक खासी साहित्य का जनक कहा जाता है, द्वारा अनुवाद कार्य आरम्भ किये गये। उन्होने कुछ कालजयी भारतीय साहित्य का खासी में अनुवाद किया।' (मारक एवं शांगलियांग 2008: xii)

खासी मॉनख्मेर परिवार की एक भाषा के रूप में भारत-आर्य और तिब्बत बर्मन के समुद्र में एक द्वीप की तरह है। यह समुद्र इस द्वीप पर शब्दों की लहरों और ध्वनियों के झोंकों के रूप में आता है और यह सब खासी भाषा का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि खासी शब्द सम्पदा का अधिकतर भाग दूसरी भाषाओं से ग्रहण किया हुआ है। खासी शब्द कोश दूसरी भाषाओं से शब्द लेकर, नये शब्दों के निर्माण और व्युत्पत्तिपरक रूपिम (derivational morphemes) की उपादेयता के जरिए समृद्ध हुआ है। कुछ उदाहरण देखें (वार, 2008: 20-21) : विदेशी शब्द (Borrowing)।

उद्योग व व्यापार पिसा, टका, हजार, पाव, मोन, सेर (भारत आर्य), किलो, टोन, बैंग (बैंक) (अंग्रेजी) आदि।

प्रशासन दोरबार, मंत्री, जिला, मुलुक, रीति, मुहौर, दाखोल, इलाका आदि (भारत आर्य), ओफिस, इलेक्शन, कोमेटी (अंग्रेजी)

दर्शन एवं धर्म दुजोक, पाप, दुवाई, दुक, नुरोक (भारत आर्य), फादर, क्रिसमस आदि (अंग्रेजी)।

दूसरी भाषाओं के शब्द इस भाषा की ध्वनियों के अनुसार बदल दिए गए हैं जैसे बेक (बैग), बेन (बैंच), केतली, पुलित (पुलिस) आदि। कुछ शब्दों का इस भाषा में अनुवाद किया गया है जैसे कोरूजैन (सिलाई मशीन), जाइसियांग थिआह (चादर), जाइसियांग मीज (मेज पोश)।

नये शब्दों का निर्माण- शोंगनोर (चेयरमैन), कौंगसान (मुख्य अतिथि), सेंग भांलांग (सामाजिक कल्याण संगठन), जियामफांग (iambic metre), नामदिंग (मिसाइल), धेंगकाली (ट्रैफिक जाम), लाद पठाइ खुबोर (मीडिया) आदि।

मुण्डा भाषाओं में भी हर स्तर पर परिवर्तन, दूसरी भाषा से शब्द ग्रहण करना और आत्मसातीकरण दिखाई देता है। 'मुण्डा और झारखण्ड की द्रविड़ भाषाओं के सम्बन्ध में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आधारभूत शब्दों में से पचास प्रनिशत शब्दों का स्थान भारतीय आर्य शब्दों ने ले लिया है।' (अब्बी 2001: 46)। मुण्डा भाषाओं में महाप्राण (फ, भ, थ) और उत्क्षिप्त (ड़, ढ़) ध्वनियां भारत-आर्य भाषाओं का प्रभाव दिखाती हैं। 'ना' अनियत (infinitive) उपसर्ग का मुण्डा भाषाओं (खरिया और सन्थाली) में प्रयोग आर्य भाषाओं का प्रभाव प्रदर्शित करता है। मुण्डा वाक्यों में संज्ञा पद (noun phrase) तथा क्रियापद (verb phrase) का विकास आर्य भाषाओं के फलस्वरूप ही है।

भारत जैसे बहुभाषी समाज में सम्पर्क, समन्वय तथा संरक्षण (retention) की प्रक्रियाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय हैं, जिन्हें अधिक विस्तार से समझने की आवश्यकता है। किन परिवर्तनों को आत्मसात कर लिया गया है एवं परिवर्तन की दिशा क्या है, किस भाषा से अन्य भाषाएँ कौन से तत्व ग्रहण कर रही हैं, इन सभी प्रकियाओं में संस्थागत, सामाजिक एवं राजनैतिक तत्व अन्तर्निहित हैं। ये सभी विषय समाजभाषा विज्ञान के अन्तर्गत शामिल किए जाते हैं। हम यह विमर्श सिडवैल (2007) की निम्न पंक्तियों से समाप्त कर सकते हैं, जो उन्होने मॉनख्मेर के विषय में कही हैं, लेकिन हम इन्हें व्यापक संदर्भ में भी कह सकते हैं:

'मॉनख्मेर भाषाओं पर पिछली शताब्दी के कार्य का पुनरावोलकन करने पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि कोई एक कार्यविधि या साधन (एवं निश्चित ही न कोई एक शोधकर्ता!) इस असाधारण रूप से प्राचीन एवं विविध भाषा परिवार के इतिहास का पुनर्निर्माण कर सकता है। लेकिन यह भी सही है कि कोई एक प्रविधि, साधन या शोधकर्ता कम करके न आंका जाए। मैं यही कहूँगा कि प्रविधि, साधन एवं व्यक्तिगत प्रयत्नों के सम्मिलन से ही हम आखिरकार अर्थपूर्ण परिणाम प्राप्त कर सकते हैं'।

3.7 सारांश

इस इकाई में हमने ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के विषय में परिचर्चा की। ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार ऑस्ट्रिक भाषा परिवार का एक उपसमूह है। मॉनख्मेर एवं मुण्डा ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार के दो मुख्य उपभाग हैं। मॉनख्मेर भाषाएँ मुख्यतः दक्षिण पूर्व एशिया में बोली जाती हैं। खासी मॉनख्मेर शाखा की एक मुख्य भाषा है जो भारत में बोली जाती है। मुण्डा भाषाएँ भारत के पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी भागों में बोली जाती हैं। नवीनतम वर्गीकरणों, शब्दकोशों तथा साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन से ये भाषाएँ समृद्ध हुई हैं और हम यह उम्मीद करते हैं कि आगे भी इस भाषा परिवार के भाषावैज्ञानिक अध्ययनों में और वृद्धि होगी।

3.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ऑस्ट्रिक भाषा परिवार को किसने सर्वप्रथम एक पृथक भाषा परिवार के रूप में पहचाना?
2. ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के अर्न्तगत आने वाले भाषा समूहों के नाम लिखिए।
3. ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषाओं को कितने उपसमूहों में विभाजित किया गया है?
4. भारत के संविधान के अनुच्छेद 343-351 में आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा परिवार की कौन सी भाषा अथवा भाषाएँ इस सूची में शामिल हैं? नाम लिखिए।
5. मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र में कौन सी मुण्डा भाषा बोली जाती है?

6. खरवारी के अन्तर्गत ग्रियर्सन ने कितनी उपभाषाओं (अथवा बोलियों) को शामिल किया है? नाम लिखिए।
7. मुण्डा भाषाओं को सर्वप्रथम किसने एक पृथक परिवार के रूप में पहचाना?
8. स्वर संगति क्या है? उदाहरण सहित समझाइए।
9. योगात्मक भाषाओं से आप क्या समझते हैं?
10. इस कथन की व्याख्या करें : मुण्डा भाषाओं में पद एवं वाक्य का विभेद नहीं पाया जाता है।
11. ग्रियर्सन ने मुण्डा एवं मॉनख्मेर भाषाओं के कौन से दो प्रमुख अन्तर बताए हैं?
12. मुण्डा शाखा में शामिल भाषाओं के नाम लिखें एवं मुण्डा भाषाओं की संरचनागत विशेषताओं का उल्लेख करें।
13. मॉनख्मेर भाषाएँ मुण्डा एवं अन्य भारतीय भाषाओं से किस प्रकार भिन्न हैं? मॉनख्मेर के अर्न्तगत कौन से भाषा समूह अथवा भाषाएँ आती हैं? मॉनख्मेर का वर्गीकरण मुण्डा भाषाओं की अपेक्षा जटिल क्यों है?
14. खासी भाषा की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
15. यह देखा गया है कि भारतीय-आर्य भाषा परिवार की भाषाओं ने अन्य भाषा परिवारों की भाषाओं को अधिक प्रभावित किया है। परिवर्तन के इस एकविमीय प्रवाह के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- David P. Thomas, 1964 : *A Survey of Austroasiatic and Mon-Khmer Comparative Studies. (http://sealang.net/sala/archives/pdf4/thomas)*
- Anderson, Gregory D S, 2001. *A New Classification of South Munda: Evidence from Comparative Verb Morphology*. Indian Linguistics. 62. Poona: Linguistic Society of India. http://livingtongues.org/docs/**Munda_Classification**.pdf
- www.lisindia.net
- Bhattacharya, S., 1975. *A new Classification of Munda. Indo-Iranian Journal 17.*

इकाई 4 चीनी-तिब्बती एवं अन्य भाषा परिवार

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 चीनी-तिब्बती भाषाएँ

4.2.1 चीनी

4.2.2 तिब्बती-बर्मी भाषाएँ

4.2.2.1 भाषाओं की संख्या तथा भाषाओं के नाम

4.2.2.2 वर्गीकरण

4.2.2.3 उत्तर-पूर्व भारत की भाषाएँ

4.3 संरचनागत विशेषताएँ

4.3.1 तिब्बती-बर्मी भाषाओं की संरचनागत विशेषताएँ

4.4 विश्व के अन्य भाषा परिवार

4.5 सारांश

4.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमारे अध्ययन का विषय है :

- चीनी तिब्बती भाषाओं के दो मुख्य समूहों चीनी और तिब्बती के भौगोलिक विस्तार, वर्गीकरण और संरचनागत विशेषताओं पर परिचर्चा करना; और
- विश्व के अन्य भाषा परिवारों का परिचय देना।

4.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम भारत के चौथे भाषा परिवार - चीनी तिब्बती भाषा परिवार पर परिचर्चा करेंगे। साथ ही हम विश्व के अन्य भाषा परिवारों का संक्षेप में उल्लेख करेंगे। चीनी तिब्बती भाषा परिवार जिसे सिनो तिब्बती या तिब्बती चीनी भी कहा जाता है, विश्व के सबसे बड़े भाषा परिवारों में से एक है। इसके बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। इस भाषा परिवार के दो मुख्य समूह हैं – चीनी और तिब्बती बर्मी। चीनी से तात्पर्य विभिन्न चीनी भाषाओं से है और तिब्बती-बर्मी भाषाएँ मुख्यतः तिब्बत, म्यांमार तथा उत्तर-पूर्व भारत में बोली जाती हैं। इन भाषाओं में तिब्बती समूह की भाषाएँ ही भारत में बोली जाती हैं। वर्तमान में मूल चीनी तिब्बती भाषा के कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन भाषाओं की समानता के माध्यम से भाषा वैज्ञानिकों ने मूल चीनी तिब्बती भाषा की संकल्पना प्रस्तुत की है जिससे आधुनिक भाषाएँ विकसित हुईं।

भाषाएँ परिवर्तनशील होती हैं, एक भाषा दूसरी भाषाओं की विशेषताओं को आत्मसात करती है, दूसरी भाषाओं को अपनी विशेषताओं से समृद्ध करती हैं और इस प्रकार ये परिवर्तित होती रहती हैं। और वर्तमान में किसी भाषा का जो प्रारूप हम देखते हैं उस रूप में भाषा को आने में अनेक वर्ष लग जाते हैं। यही इस भाषा परिवार के बारे में भी सत्य है। आरम्भ में जो एक ही भाषा थी, दूसरी भाषाओं से गहन सम्पर्क के फलस्वरूप एक विशाल एवं व्यापक भाषा परिवार के रूप में विकसित हुई।

4.2 चीनी-तिब्बती भाषाएँ

ये भाषाएँ उत्तर-पूर्व भारत, म्यांमार, बांग्लादेश तथा उत्तरी थाइलैण्ड, तिब्बत, चीन, कोरिया और ताईवान में बोली जाती हैं। चीनी-तिब्बती भाषी नियोलिथिक यांगशाओं सभ्यता से सम्बन्धित है, जिसका मूल मध्य चीन के मैदानी भागों में यैलो रिवर घाटी से माना जाता है (थरगुड 2003)। बाद में यह भाषा परिवार चीनी और तिब्बती में विभाजित हो गया। जिस रूप में आज हम इस भाषा परिवार को देखते हैं उसका विकास अनेक विस्थापनों के फलस्वरूप हुआ। यह विस्थापन अधिकतर उन क्षेत्रों में हुआ जहाँ अन्य भाषाएँ बोली जाती थीं (लापॉला 2001)। ऐसा अनुमान है कि प्राक् चीनी-तिब्बती यैलो रिवर घाटी में लगभग 6000 वर्ष पूर्व बोली जाती थी।

चीनी-तिब्बती भाषाओं को बोलने वालों की संख्या मुख्यतः एक अरब चीनी भाषियों के कारण भारोपीय भाषाओं के बाद सर्वाधिक है। बर्मी को छोड़कर अनेक तिब्बती बर्मी भाषाओं को बोलने वाले अपेक्षाकृत कम हैं (लापॉला 2006)। चीनी-तिब्बती भाषाओं के विस्तार पर ग्रियर्सन (1927:40) लिखते हैं, 'ऑस्ट्रिक के अलावा किसी और परिवार की भाषाएँ पूर्वी गोलार्द्ध में मध्य एशिया से दक्षिण बर्मा और बाल्टिस्तान से पेकिंग तक इस तरह निराकार, सतत गतिशील बोलियों के समूह के रूप में नहीं फैली हुई हैं जिस तरह तिब्बती-चीनी भाषाएँ। इसके बोलने वालों की संख्या ऑस्ट्रिक से कहीं ज्यादा है, यहाँ तक कि भारोपीय परिवार से भी (इसके बोलने वालों की संख्या ज्यादा है)। इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है और इसके सदस्यों की संख्या इतनी ज्यादा है कि कोई एक विद्वान अकेले इन्हें पूर्णतः नहीं समझ सकता। इनमें से कुछ भाषाओं जैसे तिब्बती, चीनी (siamese) या बर्मी पर विशेषज्ञों द्वारा कमोबेश कुछ अध्ययन किए गए हैं, अन्य भाषाओं के हम केवल कुछ शब्द ही जानते हैं- कुछ ईंटें मात्र जिन्हें हमें पूरे घर के नमूने के रूप में लेना होता है। जबकि कुछ अन्य के हम केवल नाम ही जानते हैं या कभी-कभी तो वह भी नहीं।'

मैतिसॉफ (2003) ने इस परिवार की भाषाओं को 'सिनोस्फेयर' और 'इण्डोस्फेयर' दो भागों में बांटा है जिसका मुख्य कारण इन भाषाओं पर चीन और भारत का भाषिक और राजनैतिक प्रभाव है। चीनी-तिब्बती भाषा परिवार का वर्गीकरण निम्न कारणों से अत्यन्त विवादास्पद है (लापॉला 2006) :

1. वर्गीकरण के आधार में भिन्नताएँ।
2. विश्वसनीय आँकड़ों का अभाव।
3. इन भाषाओं के विकास और विस्तार पर विस्थापन और अन्य भाषाओं से सम्पर्क का प्रभाव।

चीनी और तिब्बती भाषाओं के अलावा ताई-कडाई (जुआंग-दोंग) और हमोंग-मेन (मियाओ-याओ) भाषाएँ भी तिब्बती-चीनी भाषा परिवार में शामिल की जाती थीं, लेकिन इन भाषा समूहों की समानताएं सम्पर्क के फलस्वरूप विकसित मानी जाती हैं।

सिनो-तिब्बती में मुख्यतः दो समूह शामिल किए जाते हैं – चीनी और तिब्बती बर्मी। इन दोनों समूहों को पुनः अनेक उप समूहों में बांटा जाता है। पहले हम चीनी समूह की भाषाओं का वर्णन करेंगे और फिर तिब्बती-बर्मी भाषाओं की परिचर्चा होगी।

4.2.1 चीनी

चीनी भाषाएँ विभिन्न बोलियों का एक समूह है। इन बोली समूहों के अन्तर्गत अनेक बोलियां आती हैं जो कभी-कभी परस्पर बोधगम्य नहीं होती हैं। नॉर्मन (2003) के शब्दों में 'चीनी एक विशाल बोली समूह (dialect complex) है जिसके अन्तर्गत सैकड़ों स्थानीय परस्पर अस्पष्ट (mutually unintelligible) बोलियां आती हैं, जिनमें से हर एक तुलना हेतु एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।' नॉर्मन लिखते हैं कि यहाँ बोली (dialect) शब्द का प्रयोग यूरोपीय सन्दर्भ से भिन्न है। भाषा के स्थानीय रूप को उस विशेष स्थान की बोली कहा जाता है।

चीनी भाषाओं के लिए बोली शब्द के उपयोग का एक कारण उनके द्वारा एक ही लिपि का इस्तेमाल और उनके साँझा साहित्य और संस्कृति का होना माना जाता है। सामान्यतः चीनी भाषाओं के छः बोली समूह माने गये हैं (कहीं-कहीं सात और आठ बोली समूहों का भी उल्लेख मिलता है)। इन बोली समूहों में अन्तर मुख्यतः आरम्भिक सघोष व्यंजनों के आधार पर किया जाता है (ली 1936-37)। ये समूह हैं :

i) मन्दारिन (उत्तरी व दक्षिणी-पश्चिमी चीन)।

ii) वु (जियांगसू तथा जुजियांग)

iii) शियांग (हुनान)

iv) गन (जियांगशी)

v) युहे (ग्वानडोंग, ग्वांगशी)

vi) मिन (ग्वांनडोंग, फुजी, हैनान द्वीप तथा ताईवान)

कुछ विद्वान हक्का समूह (ग्वानडोंग, फुजी, जियांग़ी, सिचुआन तथा ताईवान) को भी गन भाषाओं के अन्तर्गत रखते हैं और कुछ इसे एक अलग समूह के रूप में वर्गीकृत करते हैं। नॉर्मन (1988, 2003) ने इन बोली समूहों को निम्नवत् वर्गीकृत किया है :

i) उत्तरी भाषा समूह (मन्दारिन)

ii) मध्य समूह (कुछ शियांग बोलियां, वु तथा गन)

iii) दक्षिणी समूह (युहे, हक्का तथा कुछ शियांग बोलियां)

मिन समूह को उपरोक्त वर्गीकरण में शामिल नहीं किया गया क्योंकि नॉर्मन के अनुसार मिन बोलियां चीनी भाषिक विकास की मुख्य धारा से बाहर रही हैं। मन्दारिन का भौगोलिक विस्तार तथा बोलने वालों की संख्या सर्वाधिक है। आम बोलचाल में 'चीनी भाषा' का उपयोग राष्ट्रीय मानक भाषा पूतोनगुआ (*Putonghu*) के लिए किया जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है सर्वमान्य (common) भाषा। इसकी ध्वनि व्यवस्था (phonology) बीजिंग की बोली पर तथा शब्द और व्याकरण उत्तरी बोली पर आधारित हैं। एक सर्वमान्य भाषा को विकसित करने के लिए आन्दोलन की शुरुआत बीसवीं सदी के आरम्भ में की गई। इस आन्दोलन के उद्देश्य मुख्यतः निम्न थे :

i) प्राचीन लिखित चीनी भाषा के चिह्नों (characters) को सरल बनाना।

ii) बोलचाल के लिए एक सर्वमान्य भाषा का विकास करना।

iii) स्वनिमिक (phonetic) वर्णमाला का विकास करना।

1956 में पूतोनगुआ सभी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनी। वर्तमान में यह सर्वाधिक बोली जाने वाली चीनी भाषाओं में से एक है और अधिकतर प्रकाशनों के लिए लिखित भाषा का माध्यम भी यही है (क्रिस्टल 1996)।

चीनी भाषा पर अधिक जानकारी हेतु निम्न पुस्तक/लेख का अध्ययन किया जा सकता है-

Norman, J. (1988) *Chinese*. Cambridge: CUP

Norman, J. (2003) *The Chinese Dialects: Phonology*, p. 72-83 In Thurgood and LaPolla (eds.). (2003). *The Sino-Tibetan Languages*. London & New York: Routledge

4.2.2 तिब्बती-बर्मी भाषाएँ

चीनी तिब्बती भाषा परिवार का अन्य भाषा समूह - तिब्बती बर्मी भाषाएँ, भाषाओं की संख्या की दृष्टि से दक्षिणी एशिया का सबसे बड़ा भाषा परिवार है। इन भाषाओं का भौगोलिक विस्तार विशाल है। ये भाषाएँ जम्मू कश्मीर से लेकर उत्तर-पूर्व भारत, नेपाल, म्यांमार, तिब्बत, चीन, थाईलैण्ड, वियतनाम और लाओस में बोली जाती हैं। भारत में ये भाषाएँ सबसे ज्यादा उत्तर-पूर्व में बोली जाती हैं। 'उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्य भारत के अन्य राज्यों की तुलना में क्षेत्र की दृष्टि से छोटे हैं और यहाँ की जनसंख्या भी कम है लेकिन भारतीय मानक की तुलना में भी यहाँ की भाषिक और जातीय विविधता कहीं अधिक है..... उत्तर में अरुणाचल और नागालैण्ड, पूर्व में मणिपुर और मिज़ोरम के अधिकतर मूल निवासी तिब्बती-बर्मी भाषाएँ ही बोलते हैं (बर्लिंग 2003 : 169)। कोकबोरोक किसी समय त्रिपुरा की प्रमुख भाषा थी। उत्तर-पूर्व राज्यों में मेघालय ही एकमात्र राज्य है जहाँ मॉनख्मेर भाषा – खासी बोली जाती है। खासी के अतिरिक्त मेघालय में गारो भाषा बोली जाती है जो कि एक तिब्बती-बर्मी भाषा है। असम में जहाँ भारतीय-आर्य भाषा असमी प्रमुखता से बोली जाती है, तिब्बती-बर्मी भाषाएँ भी बोली जाती हैं।

4.2.2.1 भाषाओं की संख्या तथा भाषाओं के नाम

बर्लिंग के अनुसार भारत के उत्तर-पूर्व राज्यों में भाषाओं की गिनती करना मुश्किल है क्योंकि कुछ क्षेत्रों के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है और वे क्षेत्र जिनके बारे में हम जानते हैं वहाँ भी भाषा और बोली में विभेद करना मुश्किल है। भाषाओं की संख्या के बारे में विभिन्न विद्वानों में मतैक्य नहीं है। बर्लिंग के शब्दों में 'उत्तर-पूर्व भारत में भाषाओं की संख्या अनुमानतः दो सौ तक बताई जाती है लेकिन इतनी भाषाएँ हम तभी पाएंगे जब बोलियों को भी अलग भाषा के रूप में देखा जाए। फिर भी यदि कम से कम भी देखें तो यह अनुमान 50-60 तक होगा' (2003)।

इन भाषाओं के नाम भी सही संख्या सुनिश्चित करने में परेशानी पैदा करते हैं। एक ही भाषा और बोली के लिए ही अनेक नाम हैं। वे नाम जिनसे किसी भाषा को बोलने वाले अपनी भाषा को जानते हैं (autonym), और वे नाम जिनसे दूसरे उन्हें जानते हैं (exonym), प्राचीन नाम (paleonyms) और नये नाम (neonyms), और तो और कुछ भाषाएँ अपने गाँव या समीपवर्ती नदी के नाम पर जानी जाती हैं (loconyms)। मैतिसॉफ लिखते हैं 'लोथा नागा के 40000 बोलने वालों को समीपवर्ती अंगामी, सेमा और असमी क्रमशः चिज़िमा, चोइमी तथा मिकलाई के रूप में जानते हैं। इसके विपरीत अलग-अलग भाषाओं को एक ही या समान नाम से जाना जाता है: नुंग मध्य ताई भाषा भी है और तिब्बती-बर्मी नुंग समूह की भाषा भी है। म्रु कुकी-चिन समूह की भाषा है, लेकिन मारू, जो एक तिब्बती-बर्मी भाषा ही है, बर्मी समूह के अन्तर्गत आती है। खाम तिब्बती की बोली भी है और मध्य नेपाल की भाषा भी। कभी-कभी भाषाओं के नाम संकीर्ण और विस्तृत दोनों अर्थों में प्रयुक्त होते हैं अर्थात् यह नाम किसी भाषा विशेष के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है या फिर भाषिक और सांस्कृतिक रूप से सम्बद्ध भाषा समूह के लिए भी। नामकरण जातीय और भाषिक सम्बद्धता के कारण और अधिक कठिन हो गया है।' (बर्लिंग 2003) बर्लिंग ने कुछ नामों को भ्रमित करने वाला बताया है जैसे कामरूप (मैतिसॉफ, 1991) और नागा। बर्लिंग के अनुसार पहले शब्द (कामरूप) से भाषाओं के समूह इस प्रकार बनाए जाते हैं, जैसे उनमें जातीय (genetic) सम्बद्धता हो जबकि इस तरह के सम्बन्ध का कोई प्रमाण नहीं है। नागा शब्द जातीय पहचान बताता है और नागाओं द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ तिब्बती-बर्मी की कम से कम दो या अधिक बिल्कुल भिन्न शाखाओं में आती हैं।

4.2.2.2 वर्गीकरण

एक पृथक तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार के अस्तित्व का विचार 1850 के दशक के दौरान रखा गया जब लिखित तिब्बती में अनेक शब्द लिखित बर्मी के सहजात (cognate) पाए गए। इन भाषाओं के अध्ययन के सर्वप्रथम प्रयास भारत और बर्मा में अंग्रेज़ प्रशासकों द्वारा किये गए। रार्बट शेफर (1955) ने चीनी-तिब्बती भाषाओं के वर्गीकरण द्वारा इन भाषाओं का सर्वप्रथम व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने तिब्बती-बर्मी भाषा पर उस

समय उपलब्ध सारी सामग्री एकत्र की और इस परिवार को अनेक उपसमूहों में विभाजित किया। तिब्बती-बर्मी भाषाओं को एक अलग समूह की पहचान न करके शेफर ने चीनी-तिब्बती भाषा परिवार को छः प्रमुख उप भागों में विभाजित किया। ये उप भाग हैं :

i) कैरेनिक (मध्य एवं दक्षिण बर्मा)

ii) बारिक (असम)

iii) बर्मी (भारत-म्यांमार सीमा, बर्मा, भारत चीन, तिब्बत, दक्षिण-पश्चिम चीन)

iv) बोडिक (पश्चिमी हिमालयी क्षेत्रों से नेपाल और असम, तिब्बत, पश्चिमी चीन)

v) दाइक (पश्चिमी चीन, तोन्किन, लाओस, थाईलैण्ड, बर्मा के कुछ क्षेत्र)

vi) सिनिटिक (चीन)

इस वर्गीकरण में तिब्बती भाषाओं को बोडिक में रखा गया है। बारिक, बोडिक और बर्मी भाषाएँ दक्षिणी एशिया में बोली जाती हैं। उपरोक्त वर्णित प्रत्येक भाग में उपभाग और शाखाएं हैं। यहाँ हम शेफर द्वारा दिये गये वर्गीकरण के विस्तार में न जाकर नवीनतम वर्गीकरण की चर्चा करेंगे।

दूसरा सुविख्यात वर्गीकरण मैतिसॉफ (1978) ने दिया है। मैतिसॉफ ने तिब्बती-बर्मी भाषाओं के ये उपभाग बताए हैं- कामरूप, कियांगिक, हिमालयी, काचीनिक, लोलो-बर्मी और कैरेन।

तिब्बती-बर्मी भाषाओं के निम्न उपभाग वर्तमान में सर्वमान्य हैं (लापॉला 2006):

i) कियांग - कियांग, पुमी, मुया, नामुयी, शीज़िंग

ii) लोलो - बर्मी

बर्मी भाषाएँ -बर्मी, लाउंगवाउ, [मारू], न्गो चांग [अचांग], जाइवा, लाचिक [लाशी]

लोलो भाषाएँ-उत्तरी- नोसु [यी, युनान या सिचुआन], नासु [नीसु],

मध्य - लाहु, लीसु, नुसू, जिनुओ

दक्षिणी - हानी, बिसू, फुनोई, मपई

iii) बोडिश - तिब्बती, दज़ोंगखा, तमांग, तशांगला, ताकपा

iv) कुकी-चिन - लुशाई, आशोचिन, तदिम [चिन, तिदिम], अनल, हमार

v) बोडो-कोच - बोडो, गारो, दिमासा, कचारी, कोच, राभा

vi) कोन्याक - तांगसा [नागा], चांग [नागा], कोन्याक, नोकटे, वानचो

vii) तानी-अपातानी, मिसिंग [मिरि], आदि

viii) कैरेन-पवो [करेन], कैरेनी, स्गाव

तिब्बती-बर्मी भाषाओं के वर्गीकरण के लिए कुछ लेखकों के नाम यहाँ दिए जा रहे हैं जिनके अध्ययन से छात्र लाभान्वित हो सकते हैं: ग्रियर्सन 1909, शेफर 1955, बेनेडिक्ट 1972, डिलैन्सी 1987, सन 1988, दाइ, लियू एवं फू 1989, ब्रैडले 1997, मैतिसॉफ 1996, 2003 तथा थर्गुड 2003; हाले 1982 का अध्ययन वर्गीकरणों के तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया जा सकता है।

4.2.2.3 उत्तर-पूर्व भारत की भाषाएँ

उत्तर-पूर्व भारत की कई भाषाओं की सम्बद्धता विवादास्पद है। बर्लिंग (2003) ने तिब्बती-बर्मी भाषाओं के 14 उपभाग बताए हैं जो उत्तर-पूर्व भारत में बोले जाते हैं लेकिन उनका यह भी मानना है कि इन समूहों को इस परिवार की समानाधिकारी (co-ordinate) शाखाओं के रूप में न देखा जाए, साथ ही वे यह भी लिखते हैं कि यह बिल्कुल ही असम्भव है कि उत्तर-पूर्व भारत में तिब्बती-बर्मी की 14 अलग-अलग शाखाएं हों। जैसे-जैसे हम इन भाषाओं के विषय में और अधिक जानेंगे, हम कुछ समूहों को एक दूसरे में समाहित कर पाएंगे। यहाँ इन भाषा समूहों का विवरण उनके व्यापक भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत दिया जा रहा है :

1. **मध्य क्षेत्र**

2. **बोडो-कोन्याक-जिंगपा (Bodo-Konyak-Jinghpi)**

उत्तर-पूर्व भारत का यह भाषा समूह सबसे अधिक मान्यता देने योग्य (most recognizable) है। इस समूह की भाषाओं के सम्भावित सम्बन्धों को नीचे आरेख (Stambaum or family tree) द्वारा दर्शाया गया है:

आरेख 4.1: बोडो-कोन्याक-जिंगपा भाषाएँ (स्त्रोतः बर्लिंग 2003:175)

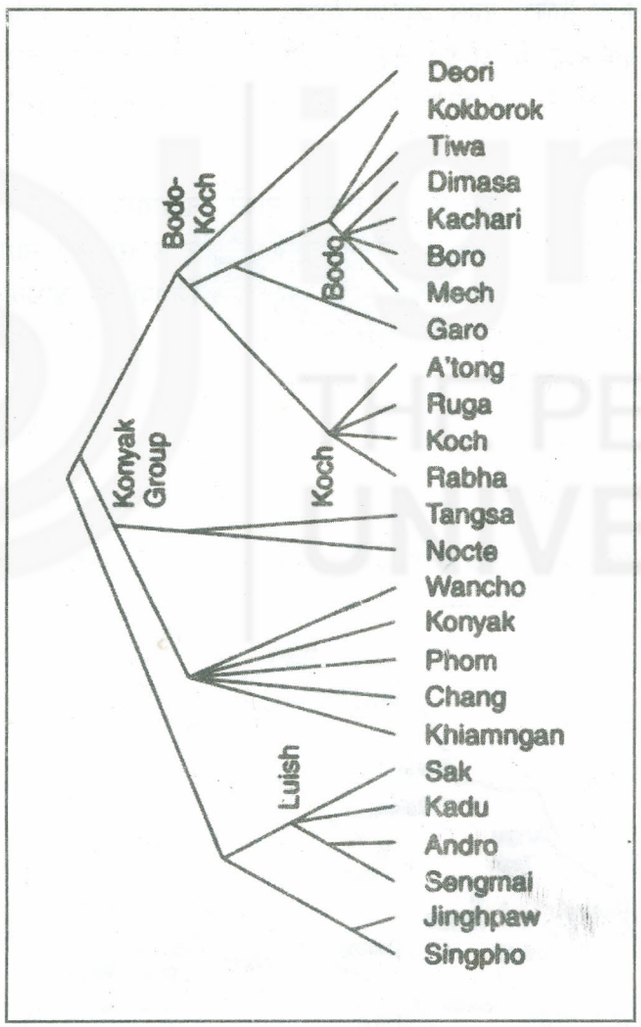

बोडो-कोन्याक-जिंगपा की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं – बोडो-कोच [बोडो, बोडो-गारो, बारिश], कोन्याक एवं जिंगपा। बोडो-कोच के पुनः चार भाग हैं - बोडो, गारो, कोच एवं देवरी (Deori)। बोडो के अर्न्तगत अनेक भाषाएँ अथवा बोलियां आती हैं – बोरो (बोडो), मेच अथवा मेक (Mech), दिमासा एवं हिल कचारी। बोडो-कोन्याक-जिंगपा मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा एवं असम में बोली जाती हैं। (देखें मानचित्र 4.1)

मानचित्र 4.1 : बोडो-कोन्याक-जिंगपा भाषा-क्षेत्र (स्त्रोतः बर्लिंग 2003:176)

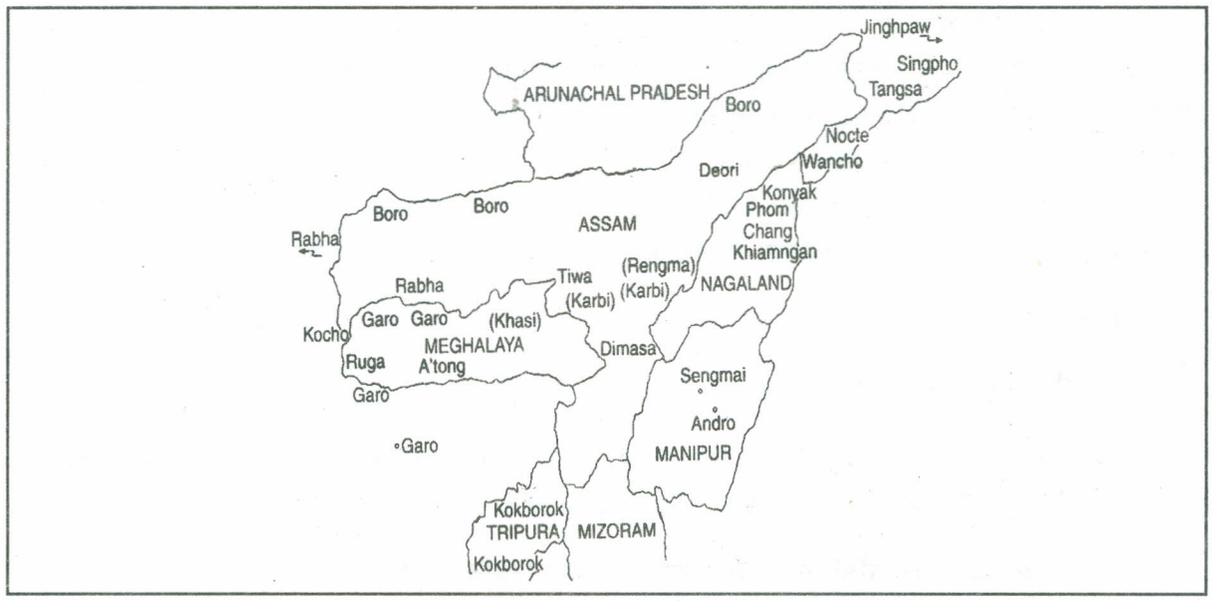

यह माना जाता है कि बोडो-कोच भाषाएँ पहले अधिक व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती थीं लेकिन आर्य भाषाओं के क्रमिक प्रसार से इन भाषाओं की इस क्षेत्र में उपस्थिति प्रभावित हुई है, जिसके फलस्वरूप ये भाषाएँ एक दूसरे से दूर-दूर क्षेत्रों में व्याप्त हैं। यह भी माना जाता है कि पहले ये भाषाएँ असम और बंगाल की प्रमुख भाषाएँ हुआ करती थीं।

कोन्याक समूह की छः भाषाएँ अब तक ज्ञात हैं – तान्सा, नोक्टे [नामसांगिया], वांचो [बनपारा], (दक्षिणतम अरुणाचल प्रदेश में); कोन्याक [तबलेंग], फेम [चिंगमेंगनू, तामल], और उत्तरी पूर्वी नागालैण्ड में चांग। बर्लिंग खियामंगन (Khiamngan) को इस समूह की सातवीं भाषा मानते हैं। जिंगपा को अधिकतर लोलो-बर्मी के साथ रखा जाता है क्योंकि इसके शब्द (vocabulary) उत्तरी-बर्मी और बर्मी से मिलते जुलते हैं। यह उत्तरी म्यांमार के काचिन राज्य में lingua franca की तरह उपयोग होती है।

2. उत्तरी क्षेत्र

इस समूह में मुख्यतः अरुणाचल प्रदेश और असम की भाषाएँ आती हैं। (देखें मानचित्र 4.2)

मानचित्र 4.2 : अरुणाचल प्रदेश एवं समीपवर्ती असम की भाषाएँ (स्त्रोत : बर्लिंग 2003:179)

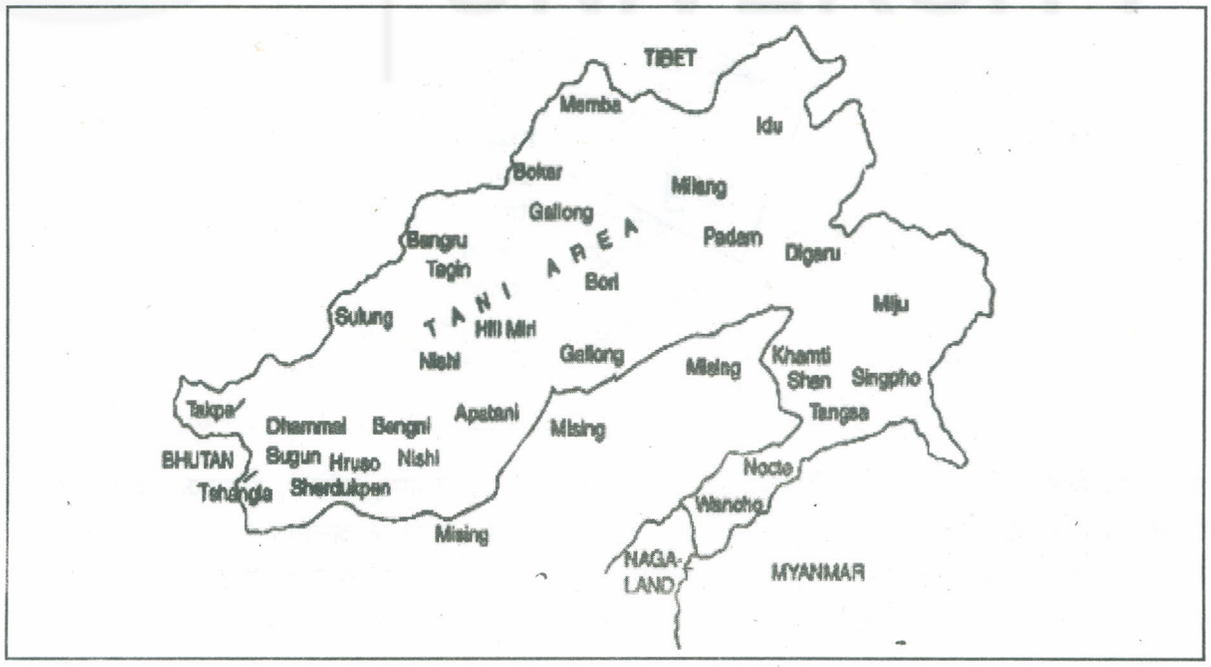

ii) **तशांगला-ताकपा (Tshangla-Takpa)**

- **तशांगला** – यह भाषा पश्चिमी अरुणाचल एवं भूटान की सीमा के पास के इलाकों में बोली जाती है और इसी से मिलती-जुलती अन्य भाषा – शारचोपखा दक्षिणी पूर्वी भूटान में बोली जाती है।
- **ताकपा [द्वाग्स]** (Dwags) – यह भाषा अरुणाचल के पश्चिमी छोर पर बोली जाती है, जहाँ इसे उत्तरी मोनपा के नाम से जाना जाता है। और तिब्बत में इसे कुओना मेनबा (Cuona Menba) के नाम से जाना जाता है। यह मध्य भूटान में बोली जाने वाली बुमतांग भाषाओं (Bumtang Languages) से मिलती जुलती है।

iii) **शरदुकपेन, बुंगुन/खोआ, सुलुंग, लिशपा** – तशांगला से पूर्व की ओर अरुणाचल प्रदेश में ।

iv) **हुइश** – हुसो [अका, धमाई/मिजी, बुंगुन तथा शेरदुकपेन से उत्तर की ओर।

v) **तानी** [मिरिश, मिसिंग, अबोर-मिरि-दाफ्ला] – तानी शब्द (सन 1993) मध्य अरुणाचल प्रदेश की भाषाओं के लिए प्रयोग किया जाता है। मिसिंग [पहाड़ी मिरि] ऊपरी असम के मैदानी भागों में बोली जाती है।

vi) **इदु-दिगारू** – उत्तर-पूर्व अरुणाचल प्रदेश

vii) **मिजु** – दक्षिणी पूर्वी अरुणाचल प्रदेश

3. पूर्वी सीमा क्षेत्र

भाषिक दृष्टि से यह उत्तर भारत का सबसे अधिक विविधता भरा क्षेत्र है। 'इस समूह का स्थान (देखें मानचित्र 4.3) नागालैण्ड के लिए अपेक्षाकृत रूप से सही है, मणिपुर में अधिकतर अनुमान की आवश्यकता पड़ी है।' (बर्लिंग)

मानचित्र 4.3 : पूर्वी सीमा क्षेत्र की भाषाएँ (स्त्रोतः बर्लिंग 2003:185)

viii) **आओ (Ao) समूह** – चुंगली, मोंगसेन, याचम, तेंगसा, लोथा, संगताम [तुकुमी], एवं यिमचुंगरू [याचुमी]

ix) **अंगामी-पोचुरी समूह** – अंगामी, चोकरी, खेजा, माओ, सिमी, रेंगमा, रंगमा-एन, पोचुरी

x) **ज़ेमे समूह** – ज़ेमे [एम्पीओ], मजीमे, लियांगमाइ [क्वोइरेंग], न्रुआंगमेइ [रोंगमेइ, काबुइ], पुइरोन, मारम

xi) **तांगखुल समूह** – तांगखुल, मारिंग

xii) **कारबी [मिकिर]**

xiii) **मेतेइ** – मेतेइ अथवा मणिपुरी

xiv) **मिज़ो-कुकी-चिन** – मिज़ो [लुशाइ] - मिज़ोरम की प्रमुख भाषा

चिन - म्यांमार के चिन राज्य की भाषा

कुकी - मिजोरम, मणिपुर एवं पड़ोसी राज्य।

इस समूह की भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध के लिए आरेख 4.2 देखें

आरेख 4.2 : पूर्वी सीमा क्षेत्र की भाषाओं के मध्य परस्पर सम्बन्ध (बर्लिंग 2003:184)

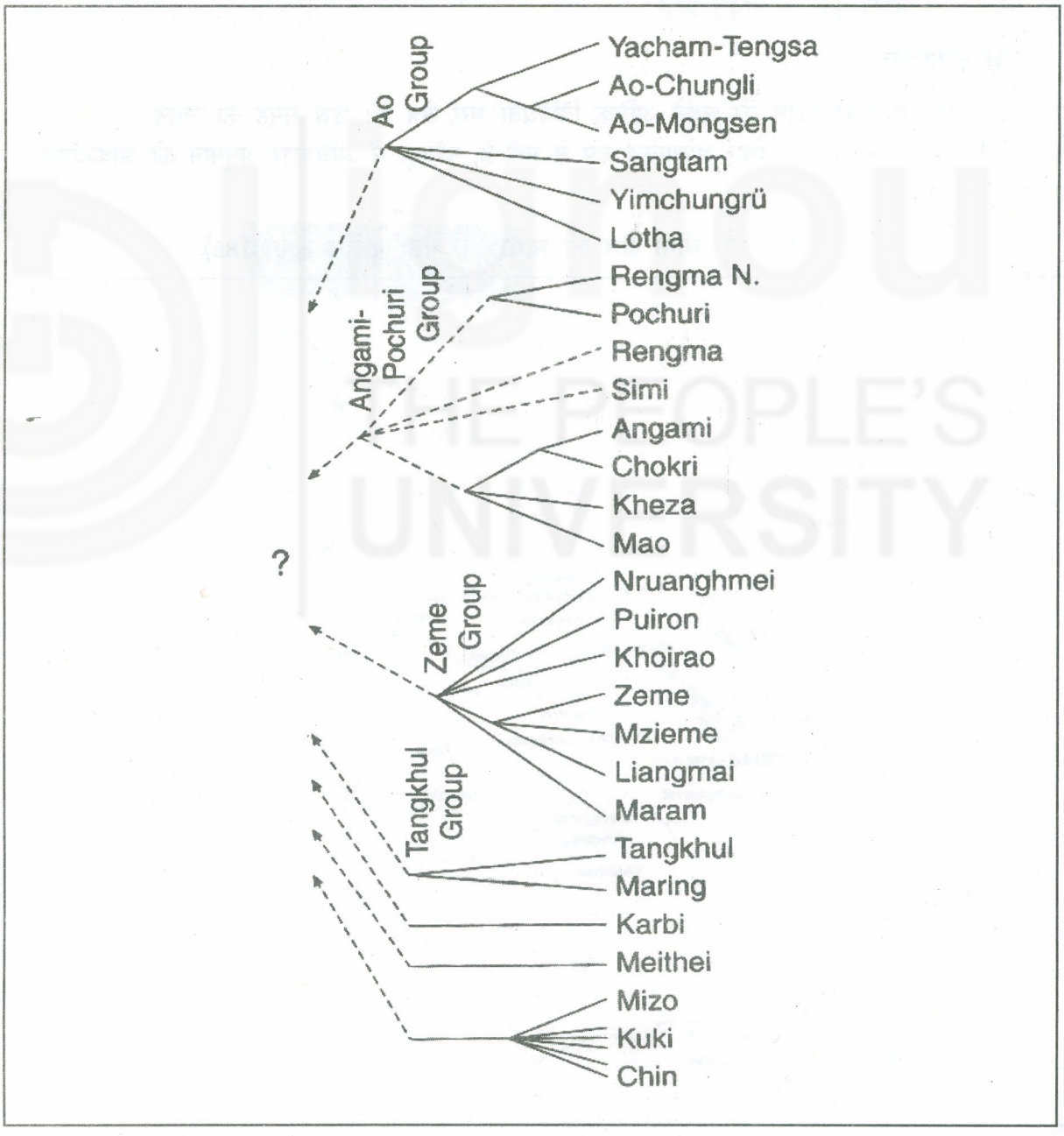

आरेख 4.2 में ठोस रेखाएं विश्वसनीय सम्बन्ध दर्शाती हैं, बिन्दुओं की (dotted) रेखाएँ अनुमान आधारित हैं। शाखन बिन्दुओं (branching nodes) की ऊंचाई भाषाओं के बीच अन्तर की मात्रा दर्शाती है (बर्लिंग)। आन्तरिक विविधता की दृष्टि से इन भाषा समूहों को उत्तरोतर इस प्रकार क्रमबद्ध किया जा सकता है:

अंगामी-पोचुरी > आओ > मिज़ो-कुकी-चिन

उत्तर पूर्व भारत के वर्गीकरण का यह विवरण बर्लिंग के निम्न शब्दों द्वारा समाप्त कर सकते हैं – 'पूर्वी सीमा की भाषाओं के सटीक वर्गीकरण के लिए हमें अभी और काम करने की आवश्यकता है। इन भाषाओं की समानताएं अद्भुत हैं लेकिन उनकी निश्चित व्याख्या करना मुश्किल है और जब तक कुछ ठोस काम नहीं होता कोई भी निर्णय नहीं दिया जा सकता। अपने आप में हरेक भाषा समूह तक ठीक है लेकिन ये समूह एक दूसरे से किस प्रकार सम्बन्धित हैं और क्या वे तिब्बत-बर्मी भाषाओं के एक अथवा एक से अधिक शाखाओं में आते हैं इसके लिए और अधिक आंकड़ों तथा विश्लेषण की आवश्यकता है।'

4.3 संरचनागत विशेषताएँ

चीनी-तिब्बती भाषाएँ एकाक्षरी (monosyllabic), अयोगात्मक (isolating) तथा तानीय (tonal) भाषाएँ हैं। अयोगात्मक भाषाओं में शब्दों के रूप विभक्ति प्रयोग से नहीं बदलते हैं। तिब्बती-बर्मी भाषाएँ चीनी भाषाओं की अपेक्षा कम एकाक्षरी और अयोगात्मक हैं। चीनी-तिब्बती भाषाओं में शब्द क्रम व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। तान (tone) की संख्या विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग है जैसे बर्मी में तीन, मन्दारिन चीनी में चार और कैन्टोनीस चीनी में नौ।

4.3.1 तिब्बती-बर्मी भाषाओं की संरचनागत विशेषताएँ

तिब्बती-बर्मी भाषाओं की कुछ संरचनागत विशेषताओं का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है (अब्बी 2001: 39-42):

- इस परिवार की सभी भाषाओं में स्वनिमिक स्तर पर तान (tone) का प्रयोग होता है जैसे, तंगखुल नागा के निम्न शब्दों में विभेद केवल तान के कारण ही किया जाता है:

  Tangkhul Naga - kəhúŋ(rising tone) = red kəhúŋ = rotten, kəhúŋ (falling tone) = lime

- इन भाषाओं में स्वर समूह पाए जाते हैं। जैसे मेतेइ (Meithei)- 'məun' (त्वचा), 'ain' (नियम, कानून), और 'məruoyobə' (महत्वपूर्ण) । चेलैया (Chelliah 1997) ने मेतेइ में 36 स्वर समूहों का उल्लेख किया है।
- इस परिवार की अधिकतर भाषाएँ अयोगात्मक हैं।
- काल विभेद केवल भविष्य और जो भविष्य नहीं है उसमें किया जाता है और यह विभेद समय सूचक क्रिया विशेषण द्वारा अभिव्यक्त होता है। क्रिया केवल भाव (aspect) दर्शाती है।
- इन भाषाओं में विशेषण अलग से नहीं पाए जाते हैं।
- चीनी-तिब्बती भाषाओं में वाक्य क्रम SOV (कर्ता, कर्म और क्रिया) है। उद्देश्य और विधेय के सम्प्रत्यय चीनी-तिब्बती भाषाओं में नहीं पाए जाते हैं। चीनी-तिब्बती भाषाएँ विषय प्रधान (topic prominent) भाषाएँ हैं।
- सभी तिब्बती-बर्मी भाषाएँ, सिवाय बाइ (Bai) और कैरेन (Karen) के, OV (कर्म, क्रिया) प्रकार की हैं। बाइ और कैरेन VO (विशेषकर SVO) प्रकृति की हैं।

4.4 विश्व के अन्य भाषा परिवार

अब तक हमने चार भाषा परिवारों - भारतीय-आर्य, द्रविड़, ऑस्ट्रिक एवं तिब्बती-बर्मी भाषाओं के विषय में जाना, जो भारत के विभिन्न भागों में बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त अण्डमान भाषाएँ भी भारत में बोली जाती हैं। ये भाषाएँ बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान द्वीप पर बोली जाती हैं। इन भाषाओं के दो समूह Little Andamanese और Great Andamanese अब तक ज्ञात हैं।

- Little Andamanese: Onge, Jarwa, and Sentinelese
- Great Andamanese: Ten different languages spoken by ten different tribes

इस परिवार की भाषाओं के विषय में बहुत कम ज्ञात है। अब्बी (2001: 42) लिखती हैं, 'इस परिवार की भाषाओं के विषय में बहुत कम ज्ञात है। आज इन्हें बोलने वाले कुछेक सौ लोग ही रह गए हैं। अण्डमान भाषा परिवार भारतीय भाषा परिवारों में सबसे प्राचीन माना जाता है और इसे यहाँ के जनजातीय समूह (Negritos) 3000 सालों से बोलते आ रहे हैं।'

भारतीय आर्य भाषाएँ भारोपीय भाषाओं का सबसे बड़ा परिवार हैं। भारोपीय भाषाओं के अन्य भाषा परिवार हैं : अल्बानीयाई, अन्तोलीयाई, आरमेनीयाई, बाल्टिक-स्लाव, जर्मन, ग्रीक, इतालवी और सेल्टिक।

भारोपीय भाषाओं के अलावा भी अन्य अनेक भाषा परिवारों की भाषाएँ विश्व के अनेक भागों में बोली जाती हैं। भारोपीय भाषाओं के अतिरिक्त कुछ भाषाएँ निम्न सारणी में दिखाई गई हैं :

सारणी 4.1: भारोपीय भाषाओं के अतिरिक्त विश्व के कुछ अन्य भाषा परिवार

भाषा-परिवार	भाषा	प्रमुख क्षेत्र जहाँ ये भाषाएँ बोली जाती हैं	बोलने वालों की संख्या (in million)
एफ्रो-एशियाई	हॉसा	पश्चिम अफ्रीका	23
	अमहारिक	पूर्वी अफ्रीका	10
	अरबी	उत्तरी अफ्रीका	155
	हिब्रू	इजरायल	3
अल्टाइक (Altaic)	मंगोल (Khalkha)	मंगोलिया	2
	तुर्की	तुर्की	45
ऑस्ट्रो-एशियाटिक	वियतनामी	वियतनाम	45
ऑस्ट्रोनेशियाई	इन्डोनेशियाई-मलय	इन्डोनेशिया मलेशिया	115
काकेशियाई	जॉर्जियाई	काकेशिया	3
Finno-Ugric	Finnish	फिनलैण्ड	5
	हंगरी	हंगरी	13
जापानी	जापानी	जापान	119
कोरियाई	कोरियाई	कोरिया	60
Niger-Congo	स्वाहिली	पूर्वी अफ्रीका	32
	इग्बो	पश्चिमी अफ्रीका	12
	योरूबा	पश्चिमी अफ्रीका	14
चीनी-तिब्बती	कैन्टोनीस	दक्षिणी चीन	55
	मन्दारिन	उत्तरी चीन	726
	बर्मी	म्यांमार	26
	तिब्बती	तिब्बत	6

स्त्रोतः एकमैजियन, डीमर्स, फारमर एवं हारनिश; (2006, 334)

इनके अतिरिक्त कुछ भाषाएँ ऐसी भी हैं जिन्हें किसी भाषा परिवार से सम्बन्धित नहीं किया जा सका है ये भाषाएँ असम्बद्ध भाषाएँ (Language Isolate) कहलाती हैं। किसी भाषा को Language Isolate श्रेणी में रखने का एक

कारण हो सकता है इन भाषाओं का किसी भाषा परिवार से सम्बन्ध सुनिश्चित न हो पाना और दूसरा इन भाषाओं के विषय में ऐतिहासिक एवं भाषिक जानकारी का अभाव होना। ऐसा हो सकता है कि पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होने पर इन भाषाओं की किसी भाषा परिवार से सम्बद्धता स्पष्ट हो जाए। इबेरियन (दक्षिणी एवं पूर्वी स्पेन), बास्क (दक्षिणी-पश्चिमी यूरोप) एवं बुरूशास्की (उत्तरी पश्चिमी कश्मीर) कुछ ऐसी ही भाषाएँ हैं।

4.5 सारांश

इस इकाई में हमने चीनी-तिब्बती भाषा परिवार के विषय में चर्चा की। चीनी-तिब्बती भाषाओं के वर्गीकरण पर विद्वान एकमत नहीं हैं। विभिन्न भाषाविदों द्वारा अलग-अलग भाषा समूह बताए गए हैं। इन भाषाओं के दो समूह सर्वमान्य हैं : चीनी और तिब्बती-बर्मी। तिब्बती-बर्मी भाषाएँ मुख्यतः उत्तर पूर्व भारत तथा समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती हैं। भाषाविदों के लिए उत्तर पूर्व भारत की भाषाओं की सही-सही संख्या बता पाना मुश्किल है। चीनी और तिब्बती-बर्मी दोनों में ही भाषा और बोली का सही निर्धारण कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। चीनी भाषाओं के लिए बोली समूह (dialect group) शब्द का प्रयोग किया जाता है और चीनी भाषाओं के सन्दर्भ में बोली शब्द का अर्थ यूरोपीय सन्दर्भ से भिन्न है। चीनी तिब्बती परिवार की अधिकतर भाषाएँ एकाक्षरी, तानीय (tonal) और अयोगात्मक हैं। इस परिवार की भाषाएँ इण्डोस्फेयर (Indosphere) और सिनोस्फेयर (Sinosphere) में भी वर्गीकृत की जाती हैं जिसका मुख्य कारण इन भाषाओं पर समीपवर्ती क्षेत्रों के सम्पर्क का प्रभाव है।

भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में अण्डमान भाषा परिवार की भाषाएँ भी शामिल हैं। वर्तमान में इन भाषाओं के विषय में बहुत कम ज्ञात है।

विश्व भर में अन्य अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। समस्त भाषाएँ अलग-अलग भाषा परिवारों के अन्तर्गत आती हैं लेकिन कुछ भाषाएँ ऐसी हैं जो किसी भी भाषा परिवार से सम्बद्ध नहीं हैं इन भाषाओं को Language isolate अर्थात असम्बद्ध भाषाएँ कहा जाता है।

4.6 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. चीनी तिब्बती भाषा परिवार का भौगोलिक विस्तार कहाँ तक है?
2. चीनी तिब्बती भाषाओं का सही वर्गीकरण क्यों कठिन है?
3. चीनी तिब्बती भाषा परिवार की शाखाओं के नाम लिखिए।
4. चीनी भाषाओं के लिए भाषा शब्द के स्थान पर बोली समूह शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है?
5. चीनी भाषा परिवार के प्रमुख बोली समूहों के नाम लिखिए।
6. चीनी भाषाओं का वर्गीकरण कीजिए।
7. तिब्बती-बर्मी भाषाओं का वर्गीकरण कीजिए।
8. उत्तर-पूर्व भारत की भाषाओं पर एक निबन्ध लिखिए।
9. भारत में बोली जाने वाली भाषाओं के भाषा परिवारों पर एक निबन्ध लिखिए।
10. चीनी-तिब्बती भाषा परिवार पर एक लेख लिखिए।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Abbi, Anvita. 2001. *A Manual of Linguistic Field Work and Structures of Indian Languages*. Lincom Europa.
- Akmajian, A, 2006. Demers, RA, Farmer AK, & Harnish RM. *An Introduction to Language and Communication*. New Delhi: Prentice Hall of India.

- Burling, R, 2003. *The Tibeto-Burman Languages of Northeastern India.* In Thurgood & LaPolla (eds.).
- Chelliah, Shobhana, L., 1997. *A Grammar of Meithei*. Berlin, New York: Mouton de Gruyter.
- Crystal, David, 1996. *The Cambridge Encyclopedia of Language*. Second Edition. Cambridge: CUP.
- Dryer, Matthew, S., 2003. *Word Order in Sino-Tibetan Languages from a Typological and Geographical Perspective.* In Thurgood & LaPolla (eds.).
- Grierson, G. A., 1927. *Linguistic Survey of India.* Vol.I. (Part-I)- Introductory . Reprint-1990: Delhi. DK Publishers & Distributors.
- Grierson, G. A., 1909. *Linguistic Survey of India.* Vol.3. (Part-I)- Tibeto-Burman Family. Reprint-1990: Delhi: DK Publishers & Distributors.
- LaPolla, R J, 2001. *The Role of Migration and Language contact in the development of the Sino-Tibetan Language Family.* In Dixon R M & Aikhenvald A Y (eds.) Areal Diffusion and Genetic Inheritance: Case Studies in Language Change. Oxford: OUP.
- LaPolla, R J, 2003. *Overview of Sino-Tibetan Morphosyntax.* In Thurgood, G. & LaPolla, R. J. (Eds.). 2003. *The Sino-Tibetan Languages*, London and New York: Routledge. Paperback edition 2007.
- LaPolla, R J , 2006. *Sino-Tibetan Languages*. v2.linguistlist.orgè~lapolla/rjlapolla/papers/Sino-Tibetan_Languages.pdf.
- Li F –K,(1936-1937). *Languages, Dialects*. The Chinese Year Book, 121-128. Reprinted 1973 in Journal of Chinese Linguistics 1 (1).
- Matisoff JA , 2003. *In Defence of Kamrupan*. Linguistics of the Tibeto-Burman Area 22 (2),
- Matisoff JA, 1996. *STEDT Monograph Series 2: Languages and Dialects of Tibeto-Burman.* Berkeley: Centre for South and Southeast Asian Languages.
- Matisoff JA , 1991. *Sino-Tibetan Linguistics: Present State and Future Prospects.* Annual Review of Anthropology.
- Matisoff, JA , 1978. *Variational Semantics of Tibeto-Burman. The Organic Approach to Linguistics Comparison.*. Philadelphia: Institute for the Study of Human Issues Publication.
- Norman, J., 2003. *The Chinese Dialects: Phonology*. In Thurgood & LaPolla (eds.).
- Shafer R., 1955. *Classification of the Sino-Tibetan languages*. Word 11 (1).
- Thurgood, G., 2003. *A subgrouping of the Sino-Tibetan languages: the interaction between language contact, change and inheritance*, in Thurgood, G. & LaPolla, R. J. (Eds.). 2003. The Sino-Tibetan Languages, London and New York: Routledge. Paperback edition, 2007.
- Thurgood, G. & LaPolla, R. J. (Eds.), 2003. *The Sino-Tibetan Languages*. London and New York: Routledge. Paperback edition 2007.
- Verma, S. , 1972. *G. A. Grierson's Linguistic Survey of India: A Summary*. Hoshiyarpur (Punjab): Vishveshvaranand Institute.

Web Resources

- Description of the Sino-Tibetan Language Family. http://stedt.berkeley.eduèhtml/STfamily.html
- LaPolla, R J (2006) *Sino-Tibetan Languages*. v2.linguistlist.org/~lapollaèrjlapolla/papers/Sino-Tibetan_Languages.pdf.